UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 05 | युगाब्द - 5125 | विक्रम संवत् - 2080 | जनवरी – 2024

मूल्यः 12

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-405302
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
ईमेल :
umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

स्वामी विवेकानंद

उठो जागो और विश्व को जगाओ। तब तक मत रुको जब तक अपने लक्ष्य पर पहुँच न जाओ। वेद के इस वाक्य को स्वामी विवेकानन्द ने जितनी स्पष्टता, दृढ़ता ओजस्विता के साथ कहा पहले कभी नही कहा गया। अपनी साधुता सम्पूर्ण मानव जाति के आध्यात्मिक उत्थान तथा पूर्व पश्चिम के बीच भ्रातृभाव के संदेश के लिए सुपरिचित स्वामी विवेकानंद को किसी भूमिका की जरूरत नही है, वे अलौकिक गुणों से परिपूर्ण एवं दैवी शक्ति से अनुप्राणित वक्ता थे। विवेकानन्द एक अनन्य देशभक्त संन्यासी थे, उनका जीवन विचार आदर्श और मातृभूमि के प्रति उनका अदम्य प्रेम युवाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत है।

मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने संसार को सहिष्णुता और सार्वभौम स्वीकृति दोनों की ही शिक्षा दी है। हमलोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में विश्वास नही करते वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं। मैं हिन्दू हूँ, मैं अपने क्षुद्र कुएं में बैठा यही समझता हूँ कि मेरा कुआं ही सम्पूर्ण संसार है, ईसाई भी अपने क्षुद्र कुएं में बैठा हुआ यही समझता है कि सारा संसार उसी कुएं में है और मुसलमान भी अपने क्षुद्र कुएं में बैठा हुआ उसी को सारा ब्रह्मांड मानता है। मनुष्य में अन्तनिहित दिव्यता और उसकी विकसित होने की अपार क्षमता के अतिरिक्त अन्य कोई सिद्धांत नही है। प्रत्येक को दूसरों की भावना आत्मसात करनी है और अपनी विशिष्टता को अक्षुण्ण रखते हुए अपने नियमों के अनुसार विकास करना है। मैं ऐसे महापुरूष को शत-शत नमन करता हूँ।

अपनी बात

कहते हैं कि जिन लोगों ने अपने मन पर विजय नहीं प्राप्त की है, उनके लिये यह संसार या तो बुराइयों से भरा है, या फिर अच्छाइयों तथा बुराइयों का मिश्रण है परन्तु यदि हम अपने मन पर विजय प्राप्त कर लें, तो यही संसार सुखमय हो जाता है। फिर हमारे ऊपर किसी बात के अच्छे या बुरे भाव का असर न होगा–हमें सब कुछ यथास्थान और सामञ्जस्यपूर्ण दिखलायी पड़ेगा।

हमारे हृदय में प्रेम, धर्म और पवित्रता का भाव जितना बढ़ता जाता है, उतना ही हम बाहर भी प्रेम, धर्म और पवित्रता देख सकते हैं। हम आत्मचिंतन और स्वाध्याय से विरत होकर दूसरों के कार्यों की जो निन्दा करते हैं, वह वास्तव में हमारी अपनी ही निन्दा है। यदि हम अपने जीवन के इस छोटे से ब्रह्माण्ड को ठीक कर लें जो शत–प्रतिशत हमारे अपने हाथ में है, जो हम ठीक कर सकते हैं तो दृश्यमान बृहद् ब्रह्माण्ड भी हमारे लिये स्वयं ही ठीक हो जायेगा। जानकार मनीषी विद्वानों के अनुसार तो समग्र जगत् को साम्यावस्था में रखा जा सकता है। हमारे भीतर जो नहीं है, बाहर भी हम उसे नहीं देख सकते। बृहत् इंजन के समक्ष जैसे अत्यन्त छोटा इंजन है, समग्र जगत् की तुलना में हम भी वैसे ही हैं। छोटे इंजन के भीतर कुछ गड़बड़ी देखकर, हम कल्पना करते हैं कि बड़े इंजन के भीतर भी कोई गड़बड़ी है।इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जगत् में जो कुछ यथार्थ उन्नति हुई है, वह प्रेम की शक्ति से ही हुई है। दोष बताकर कभी भी अच्छा काम नहीं किया जा सकता।

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों को स्मरण करें उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें,2023 के छूटे हुए अच्छे कार्यों को पूरा करने के लिए संकल्पबद्ध हों। नई ऊर्जा जोश एवं उत्साह के साथ 2024 का स्वागत करें।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।" अर्थात–उठो, जागो, और जानकार श्रेष्ठ पुरुषों के सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त करो। उपनिषद् के इस वाक्य में निहित शुभ संकल्पों के साथ दिन–रात निरन्तर आगे बढ़ते हुए अपने जीवन को सार्थक करें। इसी शुभकामना के साथ यह अंक आपको सादर समर्पित है।

आकर्षक व्यक्तित्व का निर्माण कैसे हो ?

(How to create attractive personality) ?

कमल कुमार (संयोजक)
भारतीय शिक्षा परिषद

ईश्वर हर इन्सान को अपनी इच्छा से तैयार करके पृथ्वी पर भेजता है । किसका रंग रूप कैसे बनाना है, कद–काठी कैसी रखनी है नैन नक्श किस तरह का बनाना है, यह सब ईश्वर ही करता है लेकिन अपनी Personality के ईश्वर हम स्वयं है, यह हम तय करते हैं। हमारे होंठ ईश्वर ने चाहे जैसे बनाएं हों लेकिन उन पर मुस्कराहट या उदासी रखना हमारे हाथ में है। चेहरा भले ही ईश्वर ने बनाया हो लेकिन उस पर हाव–भाव कैसे रखने हैं यह हम तय करते हैं। आँखें हमारी ईश्वर ने दी हैं, वे चाहे जैसी हों, उनमे चमक या फीकापन लाना हमारे अपने वश में है। कद–काठी ईश्वर ने चाहे जैसी बनाई हो लेकिन उसे आकर्षक बनाये रखना हमारी अपनी इच्छा पर निर्भर करता है।

1– हमारा व्यक्तित्व हमारी सोच पर निर्भर करता है (Our personality depends our thughts)–: अपनी पर्सनैलिटी का ईश्वर बन पाना या न बन पाना क्रमशः positive thinking और Negative thinking पर निर्भर करता है। जब इन्सान पोजेटिव थिंकिंग का धनी होता है तो उसकी पर्सनैलिटी ईश्वर द्वारा दिए गये रंग रूप कद काठी, नैन नक्श पर निर्भर नहीं करती। वह इन सबसे ऊपर उठ जाता है। ईश्वर ने उसे चाहे जैसा बनाया हो लेकिन उसमे गजब का आकर्षण होता है। उसके चेहरे की चमक बरबस ही अपनी ओर खींचती है, आँखों का चुम्बकीय प्रभाव अपनी और आकर्षित करता है। शरीर की सुगंध मदहोश कर देती है और उसके होंठों की मुस्कराहट अपना बना लेती है। ऐसे व्यक्ति से जब मुलाकात होती है तब उनसे मिलकर मन नहीं भरता जी चाहता है बस उसके सामने बैठे रहें। उसकी बातें सुनते रहें लेकिन जब व्यक्ति में Negetive thinking भर जाती है तो सुन्दर से सुन्दर चेहरे भी चमक खो देते हैं बड़ी बड़ी झील सी आँखों में मुर्दानगी नजर आती है। बॉडी लैंग्वेज वैराग्य उत्पन्न करता है और मन करता है कि ऐसे शख्स से जितनी जल्दी हो सके दूर हो जाऊँ।

2– जैसा हम सोचते हैं वैसे ही बन जाते हैं (As we think so we become) :– अक्सर लोग पूछते हैं कि आकर्षक व्यक्तित्व कैसे डवलप किया जाये ? इसका सीधा सा जवाब है जैसे आप अपने बारे में भीतर से सोचते हैं वहीं आपके चेहरे और लैंग्वेज पर दिखाई देने लगता है। कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप देखने में कैसे हैं ? आपने महंगे वस्त्र पहन रखें हैं या नहीं ? आप महंगी गाड़ी में सवार हो कर आये हैं या नहीं ? सवाल यह कि आपने अपने बारे में छवि कैसी बना रखी ? कैरीज्मैटिक पर्सनैलिटी आपको साबित करती है कि आप लीक से हट कर हैं। बहुत ही ख़ास है। जैसे ही आपका नजरिया पोजिट्विली देखने का बन जाता है, आपके भीतर यह भावना भर जाती है कि आप बहुत ही खुबसूरत हो गये हैं। आप जिस पार्टी या महफिल में जा रहे हैं वहाँ बस आपका ही जादू चलेगा। आपके चेहरे पर एक गजब का आकर्षण पैदा होता है। आँखों में चमक पैदा हो जाती है। होंठ मुस्कराने वाले अंदाज़ में फैल जाते हैं और आवाज में एक अद्भुत मिठास पैदा हो जाती है। आप जैसे ही पहुँच कर वहाँ मौजूद लोगों की

और देखते हैं तो वे सम्मोहित हो कर आपकी ओर देखने लग जाते हैं । आप पूरी महफिल में आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं। आपके उठने बैठने का अन्दाज बदल जाता है चाल में आकर्षण पैदा हो जाता है, आप जब किसी से बात करते हैं तो सभी आपकी ओर देखने लगते हैं। यह बात भी नोट करने योग्य है कि यदि आप Negetive thinking के साथ किसी पार्टी या महफिल को जाते हैं तो भले ही एक बार कोई आपकी ओर देख ले, लेकिन जल्दी ही नजर हटा लेगा। Negative thinking की छाप पूरे व्यक्तित्व पर पड़ जायेगी। आपका चेहरा बुझा सा होगा, आँखें निस्तेज हो जाएँगी, बॉडी लैंग्वेज बिगड़ जायेगी पहना हुआ कीमती वस्त्र या गहने भी किसी को लुभा नहीं पाएंगे।

3– आप अपने व्यक्तित्व के स्वयं जादूगर हैं (You are the magician of your personality) –: Positive thinker अनजान लोगों के बीच पहुँच कर भी उनके दिलो पर छा जाता है। दूसरा अपने लोगों के होते हुए भी खुद को अकेला महसूस करता है। बहुत ही ख़ास व्यक्तित्व का जादूगर एक गरीब लोहार का बेटा था। पिता अक्सर बीमार रहते थे, इसलिए घर में कई–कई दिन तक चूल्हा नहीं जलता था। कई बार तो ऐसा होता था कि पूरे सप्ताह में केवल एक ही रोटी खाने को मिलती थी। जब घर का गुजारा होना मुश्किल हो गया तो उसने स्कूल छोड़ दिया और बारह साल की उम्र में रद्दी अखबार खरीदने और बेचने का काम करने लगा। उसे जो भी देखता हैरान हो जाता। जो भी उसकी बातें सुन लेता, दांतों तले ऊँगली दवा लेता था। पूरी तरह विपरीत परिस्थिति में भी उसके होंठों से मुस्कान नहीं टूटती थी। देखने वालों को वह नन्हा सा फ़रिश्ता लगता था।

4– मैं वह नहल्ल हूँ, जो आपको दिखाई देता हूँ (I am not, what I appear) –: वह घरों से रददी व् अखबार खरीद कर एक बुकसेलर को बेच देता था तथा उनसे जो पेसे मिलते, उनसे घर का गुजरा चलाता था। इस बारह वर्षीय बालक के व्यक्तित्व ने उस बुकसेलर के मन को झकझोर कर रख दिया। बुकसेलर ने एक दिन पूछा– बेटे; मैं हैरान हूँ यह सोच कर कि तुम्हें ढंग से खाने को नहीं मिल पाता और फिर भी तुम इतने खुश रहते हो। मैंने आज तक तुम्हें उदास नहीं देखा, आखिर इसका क्या राज है ? बच्चा हँस दिया और कहने लगा "आप पूछ रहे हैं तो मैं बता देता हूँ, लेकिन किसी को बताइयेगा मत। मैं वह नहीं हूँ जो आपको दिखाई देता हूँ। यह सब तो ट्रायल चल रहा है।" बुकसेलर ने हैरान होकर पूंछा–कैसा ट्रायल ? मैं कुछ समझा नहीं। बच्चे ने उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा आज तक संसार में जितने भी महान लोग हुए हैं, उन्होंने कुछ नया कर दिखाया है, जिन्होंने दुनिया को कुछ दिया है, उनका इसी तरह पहले ट्रायल चला है। आप मेरी बात को ध्यान से सुनिए जिन लोगों का ट्रायल नहीं होता, वे जिन्दगी में कुछ ख़ास करने वाले नहीं होते। मैं लकी हूँ, मेरा ट्रायल चल रहा है और मैं इस ट्रायल में बिल्कुल फेल नहीं होना चाहता।

5– लगन और निष्ठा ने जनरेटर का निर्माण करा दिया (The generator was invented by dedication and royalty) –: बुकसेलर की समझ में बच्चे की बात आ गयी, लेकिन उसका अद्भुत अन्दाज दिल को भा गया। उसने बच्चे से कहा देखो बेटा, मैं और तो कोई मदद नहीं कर सकता, लेकिन एक मदद कर सकता हूँ तुम्हारा अखबार बेचने और खरीदने का काम शाम को खत्म हो जाता है। तुम चाहो तो रात को दूसरा काम कर सकते हो। मैं बुक बाइंडिंग जानता हूँ, तुम्हें सिखा दूंगा। मेरे पास काम भी बहुत है तुम्हारी आमदनी

डबल हो जायेगी। बच्चे ने मुस्करा कर स्वकृति दी। कुछ ही दिनों में बुकसेलर ने उसे बुक बाइंडिंग सिखा दी। बालक के पास ढेर सारी पुस्तकें बाइंडिंग के लिए आने लगीं। वह न केवल उनकी बाइंडिंग करता बल्कि उन्हें पूरा पढ़ भी डालता। एक बार किसी संस्थान से बहुत सारी विज्ञान की पुस्तकें बाइंडिंग के लिए आयीं। उस बच्चे की रूचि विज्ञान में और बढ़ गयी। पुस्तकों को पढ़ कर उसने पुरानी बोतलों और तारों से एक छोटे से जनरेटर का अविष्कार करके दिखाया। यह वह युग था जब बिजली नहीं हुआ करती थी। लोगों को प्रकाश का एक नया तरीका मिल गया।

6– हम्ब्री हेली के भाषण से बालक के जीवन में नया मोड़ आया (There was a turning point in the child's life having impressed by the speech of Humbri Halley)

संस्थान के वैज्ञानिकों को जब उसका पता चला तो वे उससे मिलने आये। मिलकर उस बालक की पीठ थपथपाई और उन्होंने बच्चे को बताया की लन्दन में एक संस्था है जिसका नाम रॉयल इंस्टीट्यूट है। वहाँ कुछ दिनों बाद जाने माने वैज्ञानिक सर हम्फ्री हेली भाषण देने आ रहे हैं। उन्होंने उस बालक को सर हम्फ्री का भाषण सुनने जानने का टिकट दिया। निर्धारित तिथि को यह बालक सर हेली के भाषण को सुनने निश्चित स्थान पर पहुँच गया। बाल ने न केवल सर हेली का भाषण सुना बल्कि उसके नोट्स भी तैयार किये। उनका अपनी भाषा में सरलीकरण किया तथा उसकी सुंदर बाइंडिंग करके हेली को प्रेषित कर दिया । सर हेली इस बच्चे की क्षमता, बुद्धिमत्ता तथा बहुमुखी प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुए और उस बच्चे को अपने सहायक के रूप में नौकरी पर रख लिया।

यही बच्चा जो अब बड़ा हो चुका था। सर हेली के साथ कई देशों में घूमा और विश्व के जाने माने वैज्ञानिकों से मिला तथा उनके विचार जाने। Positive Thinking के धनी इस बालक ने आगे चलकर चुम्बक के सहारे बिजली का आविष्कार किया। इतना ही नहीं उसने बिजली की मोटर डायनुमा व ट्रांसफार्मर का अविष्कार कर लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया। इसी वैज्ञानिक ने बेन्जीन नामक रसायन की खोज की और कार्बन तथा क्लोरीन के साथ मिलाकर नये यौगिक बनाये। सम्भवतः इनका नाम आप जानते होंगे। यदि नहीं तो जान लें यह महान वैज्ञानिक के रूप में माईकल फैराडे के नाम से जाने गये। महारानी विक्टोरिया ने जब इन्हें 'नाइट' की उपाधि देनी चाही तो इन्होनें यह कहकर विनम्रता पूर्वक इंकार कर दिया "कि मैंने जो कुछ किया वह मेरा कर्तव्य था।"

अद्भुत व्यक्तित्व के धनी इस जादूगर को मैं हृदयतल की गहराइयों से प्रणाम करता हूँ। Negativity जिसको स्पर्श तक न कर पायी।

महिमा

शिक्षक है शिक्षा का सागर
शिक्षक बाँटे ज्ञान बराबर,
शिक्षक मन्दिर जैसी पूजा
माता–पिता का नाम है दूजा।
प्यासे को जैसा मिलता पानी,
शिक्षक है वो ही जिन्दगानी,
शिक्षक न देखे जात–पाँत,
शिक्षक न करता पक्ष–पात,
निर्धन हो या हो धनवान,
शिक्षक को सब एक समान,
शिक्षक डूबते को सहारा,
शिक्षक का सदा ही कहना
श्रम लगन है सच्चा गहना।

न्यायपालिका की आवश्यकता तथा विशेषता

डॉ0 जयश्री प्र. शास्त्री

न्याय का पालन करने वाली उसकी सुरक्षा करने वाली व्यवस्था न्यायपालिका कहलाती है। सभी को समान न्याय सुनिश्चित करना यह न्यायपालिका का असली काम है। न्यायपालिका अर्थात judiciary या judicial system या judicature किसी भी जनतंत्र के तीन प्रमुख अंगों में से एक है। कार्यपालिका और विधायिका इसके अन्य दो अंग होते है। संप्रभुता सम्पन्न राज्य की तरफ से न्यायपालिका कानून का सही अर्थ निकालती है एवं कानून के अनुसार न चलने वालों पर दंड निर्धारित करती है। इस प्रकार न्यायपालिका विवादों को सुलझाने तथा अपराध कम करने का काम करती है। न्यायपालिका अप्रत्यक्ष रूप से समाज के विकास का मार्ग व्यापक तथा समृद्ध करती है।

स्वतंत्र न्यायपालिका की आवश्यकता :

इस तरह निदर्शन में आता है की हर समाज में व्यक्तियों के बीच, समूहों के बीच व्यक्ति समूह तथा सरकार के बीच विवाद उठते हैं, ऐसे समय पर इन सभी विवादों को कानून के शासन के सिद्धांत के आधार पर एक स्वतंत्र संस्था द्वारा हल करने की कोशिश की जाती है। कानून के शासन का भाव यह है कि धनवान और गरीब, स्त्री और पुरुष सुधारित तथा पिछड़े सभी लोगों पर एक समान कानून लागू होना चाहिये। न्यायपालिका की प्रमुख भूमिका यही होती है की वह कानून के शासन की रक्षा और कानून की सर्वोच्चता को सुनिश्चित करें। न्यायपालिका क्या करती है, तो वह व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करती है, विवादों को कानून के अनुसार हल करती है और यह सुनिश्चित करती है कि लोकतंत्र की जगह किसी भी एक व्यक्ति या समूह की तानाशाही न चले। इसके लिए न्यायपालिका का किसी भी राजनीतिक दबाव से मुक्त होना जरूरी होता है। यह स्वतंत्र न्यायपालिका की आवश्यकता होती है।

विशेषज्ञों की मान्यता है कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता का अर्थ स्वेच्छाचारिता या उत्तरदायित्व का अभाव नही है। न्यायपालिका देश की लोकतांत्रिक राजनीतिक संरचना का एक हिस्सा है। देश के संविधान, लोकतांत्रिक परंपरा और जनता के प्रति न्यायपालिका जवाबदेह है। न्यायपालिका की स्वतंत्रता भारतीय संविधान ने अनेक उपायों के द्वारा सुनिश्चित की जाती है।

प्राचीन भारत में, मुगल काल में, ब्रिटिश काल में न्यायपालिका अस्तित्व में थी। भारतीय संविधान के अनुसार भारत में न्यायिक व्यवस्था में सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय, जिला न्यायलय तथा लोक अदालत यह मुख्य प्रकार हैं। 26 जनवरी 1950 को जब भारतीय संविधान अस्तित्त्व में आया तभी भारत के सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना उसके अंतर्गत की गई। सर्वोच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में केंद्र सरकार, राज्य सरकार अथवा राज्य सरकारों के मध्य उत्पन्न हुए यह मामले आते हैं। यह न्यायालय भारत का शीर्षस्थ न्यायालय होने के कारण नागरिकों के मौलिक अधिकारों के प्रति भी कार्य करता है। स्वयं के दिये फैसलों पर पुनर्विचार करके समीक्षा भी यह न्यायालय करता है। उच्च न्यायालय प्रत्येक राज्य में होता है। इन न्यायालयों का अधिकार क्षेत्र केंद्रशासित राज्य राज्य या विभिन्न राज्यों के समूह

को माना जाता है। उच्च न्यायालय के पास नागरिकों के मूल और आधारभूत अधिकारों की रक्षा करने के हेतु अपने कार्यक्षेत्र के अंतर्गत किसी भी व्यक्ति या सरकार को आदेश, निर्देश या अपील जारी करने का अधिकार है। भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक राज्य को अलग–अलग जिले में बांटकर इन जिलों में स्थित न्यायालय को जिला न्यायालय कहा जाता है। इसका नियंत्रण सीधा उच्च न्यायालय के अंतर्गत होता है। 1987 कानूनी सेवा प्राधिकरण के अंतर्गत लोक अदालतों को कानूनी और वैधानिक दर्जा दिया गया है। भारत में जिला तथा सत्र कोर्ट में लंबे समय से चल रहे मामलों को तीव्र गति से निस्तारण करने हेतु फास्टट्रैक कोर्ट की भी स्थापना की गई है। किंतु अब इन कोर्ट में महिलाओं और बच्चों से जुड़े आपराधिक मामलों की सुनवाई भी की जाती है।

न्यायपालिका की स्वतंत्रता एवं विशेषता :

निष्पक्ष लोकतंत्र को बनाए रखना यह न्यायिक स्वतंत्रता का उद्देश्य होता है। न्यायाधीशों को किसी अन्य कारक से प्रभावित, कनून के अनुसार उनके समक्ष विवाद का फैसला करने में सक्षम होना यह न्यायपालिका की स्वतंत्रता का अंतर्निहित उद्देश्य है।

स्वतंत्र न्यायपालिका का महत्व तथा लाभ :–

1) नागरिकों की स्वतंत्रता एवं अधिकारों की रक्षा
2) निष्पक्ष न्याय की प्राप्ति
3) लोकतंत्र की सुरक्षा
4) संविधान की सुरक्षा
5) व्यवस्थापिका और कार्यपालिका पर नियंत्रण
6) विधि के शासन को कायम रखना।
7) कार्यपालिका और विधायिका एक दूसरे के अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण किए बिना ठीक से काम कर रही है या नही इसकी जाँच करना है।
8) केवल स्वतंत्र न्यायपालिका ही अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा कर सकती है।
9) स्वतंत्र न्यायपालिका संविधान की सर्वोच्चता बनाए रखती है।

निष्कर्ष–भारत के परिवेश में सोचा जाए तो न्यायपालिका संक्रमणकालीन न्याय पहल जैसे सुलह पुनर्वास और पुनर्निर्माण और मानवाधिकारो के लिए सम्मान सुनिश्चित करने की, दंड से मुक्ति का मुकाबला करने की कानून के शासन में विश्वास की महत्वपूर्ण भावना पैदा करने से राज्य संस्था की प्रभावशीलता को बढ़ाने में भूमिका निभाती है।

वास्तविकता में भारत में संविधान में कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं है। लेकिन, न्यायपालिका की स्वतंत्रता संविधान के विभिन्न प्रावधानों के पक्षों में निहित है। न्यायपालिका की स्वतंत्रता तथा कानून का शासन संविधान की बुनियादी विशेषताएँ है और इसे संवैधानिक संशोधनों द्वारा भी समाप्त किया नही जा सकता।

मनुष्य जीवन की न्यायान्यायता सुचारू रूप से चलने के लिए न्यायपालिका की आवश्यकता उसकी विशेषताओं के साथ समृद्ध बनाती है। धर्म की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है।

संदर्भ :

1. भारत में न्यायपालिकाः प्रकाश नाः नाटाणी, 2004
2. भारत का वैधानिक एवं सांविधानिक इतिहास जी.पी. त्रिपाठी, 2004
3. प्रशासनिक विधि यू.पी. डी. केसरी. 2002
4. हिंदी विकिपीडिया– https://hi.m.wikipedia.org

जो व्यक्ति दूसरों की बिना किसी भी स्वार्थपूर्ण उद्देश्य से मदद रकता है, वो असल में खुद के लिए अच्छे का निर्माण कर रहा होता है।

रामकृष्ण परमहंस

हे आर्य पुत्रों हे राम भक्तों

हे आर्य पुत्रों हे राम भक्तों,
तुम्हे अयोध्या बुला रही है।
दमक रहा है श्री राम मंदिर, 2
दिवाली सी जगमगा रही है ॥ ध्रु.॥

बड़ी खुशी का दिन आज आया, 2
राम लला ने है मान पाया।
ध्वजा सनातन ले राम टोली, 2
वचन को अपने निभा रही है ।
हे आर्य पुत्रों हे राम भक्तों ..... ॥ 1 ॥

हजारों सालों की चिर प्रतीक्षा, 2
सफल हुई भक्तों की तपस्या
अवधपुरी की धरा मगन हो, 2
जय जय श्री राम गा रही है।
हे आर्य पुत्रों हे राम भक्तों ..... ॥ 2 ॥

जो कार सेवक थे उनको वंदन, 2
सभी के माथे पे आज चंदन
हनुमान गढ़ी – कनक भवन को, 2
सरयु मैया लुभा रही है ।
हे आर्य पुत्रों हे राम भक्तों ..... ॥ 3 ॥

हे आर्य पुत्रों हे राम भक्तों,
तुम्हे अयोध्या बुला रही है।
दमक रहा है श्री राम मंदिर, 2
दिवाली सी जगमगा रही है ॥ ध्रु. ॥

स्वाधीनता के पुजारी सुभाषचन्द्र बोस

संकलनकर्ता : चन्द्रपाल सिंह

सुभाष चन्द्र बोस अपने समय के महान नेता रह चुके है। बचपन से ही वह बहुत होशियार थे और सारे विषयों में उनके अच्छे अंक आते थे। 23 जनवरी 1897 को उत्कल प्रान्त के कटक नामक नगरी में उनका जन्म हुआ था। इनकी माता प्रभावती स्वामी रामकृष्ण परमहंस की परम भक्त थी। तथा स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित थी। सुभाष पर भी स्वामी विवेकानन्द के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा था।

सुभाष जी 15 सितम्बर 1919 को लन्दन गये और वहाँ कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय से आई.सी.एस की परीक्षा उत्तीर्ण की और योग्यता सूची में चौथा स्थान प्राप्त किया पर अपने पूर्व निश्चय के अनुरूप 22 अप्रैल 1921 को उन्होंने आई.सी.एस. से त्याग पर दे दिया। उनके जीवन के कुछ प्रेरणाप्रद प्रसंग जो उनके निजी जीवन से जुड़े हैं –

दो समय की रोटी

यह बात उस समय की है जब सुभाषचन्द्र बोस छोटे थे। उनका दिल बहुत विशाल था। वह किसी के बारे में सोचा करते थे। एक दिन हर दिन की तरह जब वह स्कूल आए तो उनकी नजर एक बुजुर्ग महिला पर पड़ी। वह महिला बेहद बूढ़ी और नाजुक थी। उसके चेहरे से साफ–साफ दर्द झलक रहा था। वह गरीबी के चलते बेहद टूट चुकी थी। काफी समय तक वह उस महिला को ऐसे ही भीख माँगते देखते रहे। एक दिन उनके धैर्य की सीमा टूट गयी। सुभाषचन्द्र बोस अपने आपको धिक्कारते हुए बोले कि समाज का यह कैसा न्याय है कि एक तरफ यह बुढ़िया भिखारी है जो दिन–रात एक करके भीख मांगती है और अपना पेट पालती है और कहाँ हमारे जैसे लोग भी है जो आराम से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। यह तो सरासर सामाजिक अन्याय है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो गरीब और अमीर के बीच एक बड़ी खाई आ जायेगी। पर मैं ऐसा नही होने दूँगा।

फिर सुभाषचन्द्र बोस ने एक अच्छी तरकीब सोची क्योंकि उनका कालेज उनके घर से थोड़ी दूर था। इसलिए उनको अपने पिताजी से कालेज तक पहुँचने के लिए बस के पैसे मिलते थे। अब उन्होंने यह तरकीब सोची कि वह अब से हमेशा ही कालेज पैदल जाया करेंगे और जो बस के रुपये पीछे बचेंगे उन्हें उस वृद्धा भिखारिन को दे देंगे। सुभाषचन्द्र बोस ने किसी को भी कानों कान खबर तक पड़ने नहीं दी कि वह कालेज पैदाल जा रहे थे और बस के पैसे बचाकर भिखारिन को दे रहे थे। एक रात भयंकर तूफान आया। वर्षा और तूफान के कारण वह विद्यालय नहीं जा सका। तीन दिन के पश्चात वह विद्यालय गया। निश्चित स्थान पर पहुँचते ही अब उसने देखा कि न तो वहाँ वृक्ष है और न बुढ़िया है तो उसे बड़ा धक्का लगा। जबकि वह वहाँ खड़ा चिन्ता में डूब गया। लोगों ने बताया कि बुढ़िया अब इस संसार में नहीं रही।

यह सुनते ही सुन्न सा वह उल्टे पैर घर लौट आया और औंधे मुँह बिस्तर पर जा गिरा। माँ ने जब पूछा तो सारी बात बता दी। माँ ने कहा–''बेटा! उस जैसी कितनी ही असहाय अभागिने इस देश में भरी पड़ी हैं। जब तक देश परतंत्र रहेगा, यह दुर्दशा बनी रहेगी।'' तभी सुभाष ने मन ही मन में संकल्प किया कि मैं देश को स्वतंत्र कराऊँगा। भारत माता

को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराऊँगा।

सच्ची सेवा भावना

सुभाष चन्द्र बोस के जीवन से जुड़ा एक ऐसा किस्सा भी है। जब कलकत्ता में भारी बाढ़ ने तबाही मचा रखी थी। बाढ़ के चलते जीवन अस्त–व्यस्त हो चला था। लोगों के हाल बुरे हो गए थे। सभी को भारी नुकसान उठाना पड़ा था। बाढ़ से हुए नुकसान से राहत पहुँचाने के लिए बहुत से स्वयं सेवकों ने मोर्चा संभाल रखा था। सभी स्वयं सेवक दिन–रात एक करके लोगों की सेवा में लगे रहते थे। इन्हीं स्वयं सेवकों में सुभाष चन्द्र बोस भी शामिल थे। वह भी इस नेक कार्य में अपना योगदान दे रहे थे। बहुत बार तो ऐसा भी होता था कि उन स्वयंसेवकों को आराम करने तक का भी मौका नहीं मिल पाता था।

सुभाष चन्द्र बोस के माता–पिता को इस बात की बहुत चिन्ता रहती थी कि उनका बेटा खुद के लिए बिल्कुल भी समय नहीं निकालता। एक दिन जब बोस घर लौटे तो उनके पिताजी ने कहा–''बेटा तुम बिना थके और बिना रूके दिन–रात काम में लगे रहते हो। कभी तो फुर्सत से बैठकर खुद के लिए भी समय निकाला करो। हम सभी का भी बहुत मन होता है कि तुम्हारे साथ बातचीत करने का। पर तुम्हें तो फुरसत नहीं मिल पाती है। मैं यह नहीं कह रहा कि जो तुम कर रहे हो वह गलत है। पर इस चीज के चलते हम अपने आपको तो नहीं भूल सकते हैं ना ?'' पिता जी की इस बात पर सुभाष चन्द्र बोस ने कहा, ''पिता जी क्या आपको याद है कि आपने ही हम सभी को बचपन में सिखाया था कि सेवा से बढ़कर कोई दूसरा धन नहीं होता। तो मैं बस आपकी ही बात का अनुसरण कर रहा हूँ।'' पिता जी ने कहा–हाँ यह सत्य है कि सेवा से बढ़कर कोई दूसरा धन नहीं होता पर अपने लिए भी जीवन जीना जरूरी है। अच्छा अब एक बात बताता हूँ कि गाँव वालों ने परसों माँ दुर्गा का जागरण रखा है तो उसमें तुम्हें भी शामिल होना है। बोस ने कहा–यह अच्छी बात है कि गाँव वालों ने माता का जागरण रखा है। पर पिताजी मैं उसमें शामिल नहीं हो सकता हूँ। मुझे जागरण के सामने लोगों के दुःख नजर आ रहे हैं। आप मुझे क्षमा करें, मैं जागरण का हिस्सा नहीं बन पाऊँगा। ऐसा कहते–कहते बोस की आँखों से आंसू छलक पड़े। बोस के पिताजी को अपने बेटे की दृढ़ निश्चय और सेवा भावी सोच पर गर्व हो रहा था।

नेताजी का तुलादान

आजाद हिन्द फौज की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए धन की सतत कमी नजर आ रही थी, चाहे वह शस्त्र हो या सैनिकों का भोजन, अपना जीवन देश के लिए अर्पित करने वाले यह सैनिक और कुछ तो चाहते नहीं थे किन्तु सुभाष बाबू जानते थे कि कम से कम सैनिकों की अस्त्र–शस्त्र की कमी को धन से ही पूरा किया जा सकता है। इसलिए नेताजी के सभी मित्रों ने तय किया कि 23 जनवरी सुभाष बाबू का जन्म दिन है। क्योंकि उस दिन उन्हें सोने से तोला जाए। रंगून निवासी भारतीय समाज में नेताजी के इस तुलादान के समाचार से उत्साह की लहर दौड़ गई। पंजाबी महिलाएं अपना एकतारा लेकर संत तुकाराम के भजन गाने लगी।

सबका उत्साह देखते ही बनता था। अंततः तुलादान का समय निकट आ गया एक पलड़े पर सूर्य के समान तेजस्वी नेताजी विराजमान हुये और दूसरी ओर अपने घर से लाये स्वर्ण आभूषणों का भारतीय नागरिकों ने ढेर लगाना शुरू कर दिया। यह सोना नेताजी के वजन के बराबर नहीं हो पा रहा था। एक के बाद स्वर्ण आभूषणों के आने का क्रम चल ही रहा था कि अचानक एक युवती जो

कोने में सिसकियाँ भरती आँखों में आंसू लिए खड़ी थी, अचानक सामने आयी। सुभाष बाबू के एक सहयोगी ने बताया कि कल ही इस बहन के पति की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ है। इस बहन ने अपना स्वर्ण सिन्दूर से पुता हुआ सौभाग्य चिन्ह शीश फूल तराजू पर रख दिया। नेताजी की आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। वे केवल इतना ही कह सके–''देवता तुम्हारी पदरज के लिए लालायित रहेंगे।''

किन्तु स्वर्ण का भार अभी भी पूरा नहीं हुआ था। अचानक एक जर्जर वृद्धा माता सोने की फ्रेम से जड़ित चित्र अपने सीने से लगाकर आई और नेता जी से बोली–''यह मेरे इकलौते बेटे का चित्र है। नेता जी उसे अंग्रेजों ने युद्ध के पहले ही सिंगापुर में फाँसी पर चढ़ा दिया था। जब बेटा ही नहीं रहा तो अब इस चित्र को सोने की फ्रेम में मढ़ने से क्या फायदा ? माँ ने वह चित्र जमीन पर पटका तो उस फ्रेम का शीशा टूट कर चूर–चूर हो गया। वृद्धा माँ ने चित्र निकालकर पुनः अपने सीने से लगाया और सोने की फ्रेम तराजू के दूसरे पलड़े पर रख दी। तराजू थर्रा उठी। लोगो ने देखा कि सोने का वजन पूरा हो गया है। नेताजी नीचे उतरे और उस वृद्धा माँ के चरण स्पर्श करके अपने जीवन को धन्य करने लगे।

इस तुलादान को देख रही एक जापानी महिला ने एक भारतीय सैनिक की पत्नी से पूछा–''नेताजी का यह जो तुलादान हुआ है इस सोने का आप लोग क्या करने वाले हैं ?''

सैनिक की पत्नी ने कहा–''यह पूरा स्वर्ण माँ भारती को स्वतंत्र कराने के लिए चल रहे आन्दोलन के संघर्ष पथ पर बिखेर दिया जायेगा।' जापान की महिला के लिए यह आश्चर्य जनक विषय था उसने कहा, ''यदि यही तुलादान मेरे देश के किसी नेता का हुआ होता तो पूरा सोना देश के खजाने में जमा हो जाता, किन्तु अपने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले ऐसे नेता मैं पहली बार देख रही हूँ।''

''अगर जीवन में संघर्ष न हो,
कोई जोखिम न हो,
तो जीने में खाक मजा आयेगा ?''

गीत

करें बड़ों का आदर मन से, हिले-मिले छोटों से।
ध्यान लगाकर पढ़ने बैठे, दूर रहे खोटों से ।।
कोई काम न ऐसा कर दे पड़े देखना नीचा ।
हमको तो आगे बढ़ना है, काम करेंगे ऊँचा ।।
पथ बाधाओं से जूझेंगें, लोहा लेंगे डटकर ।
संकल्पों पर अड़े रहेंगे, लिए मोर्चा तनकर ।।
वैर विरोध न कोई होगा, ईर्ष्या को रौदेंगे।
नम्रभाव से मधुर प्यार की, नई पौध रोपेंगे ।।
हिल-मिलकर बढ़ते जायेंगे, तजकर चाल कुचाल।
तभी बनेंगे सबसे आगे, अच्छी एक मिसाल ।।

GOOD MANNER*S

Say Sorry, Thank you, please
And do this generously
Excuse me, when you sneeze
that's how you begin to be
Good mannered you will be
you will please good you see
For your good Lord above
Lives in each of us with love
So it's very good to be
Good mannered you see

माँ

माँ तू जीवन का आधार है।
बच्चों का संसार है।
माँ से बढ़कर कोई नहीं
माँ शब्द महान है।

माँ एक तीर्थ स्थल है।
माँ जिसके पास है, वो धनवान।
बनता वही अमर जवान है।
जिसके पास माँ का मान है।

माँ का जहाँ होता सम्मान,
वही बसता है भगवान।
हिमालय भी करता है प्रणाम
जब आता है माँ का नाम।
दाना घास नहीं है खाता
और दिमागी दौड़ लगाता।

जब होता है माँ का अपमान,
होता है तब विश्व में संग्राम
इसलिए करो माँ का सम्मान
जो देती है हमको प्यार महान।

सामान्य ज्ञान पहेली

दाना घास नहीं है खाता
और दिमागी दौड़ लगाता।
लाखों करोड़ों की गिनती
क्षणभर में है कर जाता।

– कम्प्यूटर

एक मुँह तीन हाथ
एक टाँग पर लटकी।
ठंडक देना उसका काम,
जल्दी बताओ क्या है नाम।

– पंखा

आसमान में घूमा करता।
कभी न डरता
उसमें बैठा करते प्राणी,
वह कभी नहीं आहें भरता।

– हवाई जहाज

बीमार नहीं वह रहती
फिर भी वह खाती है गोली।
डर जाते हैं सभी सुनकर
उसकी बोली।

–बन्दूक

रामजन्मभूमि मंदिर के गर्भगृह में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का सौभाग्य

डॉ0 हरिप्रसाद दुबे

अलौकिक सौभाग्य के दुर्लभ संयोग में अयोध्या रामजन्म भूमि पर निर्मित भव्य मंदिर के गर्भगृह में प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी 22 जनवरी के मंगल मुहूर्त में अपने हाथों से रामलला के नूतन विग्रह को प्रतिष्ठित करेंगे। श्रीराम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के प्रतिनिधि मण्डल में महासचिव चंपतराय, मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेन्द्र मिश्र, कोषाध्यक्ष स्वामी गोविन्द देव गिरि के अलावा ट्रस्ट के सदस्य पेजावरमठ के पीठाधीश्वर स्वामी विश्वेष प्रसन्न तीर्थ ने नई दिल्ली में 25 अक्टूबर 2023 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भेंटकर उन्हें रामजन्म भूमि पर नवनिर्मित मंदिर में राम लला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के लिए आमंत्रित किया। रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव 15 से 24 जनवरी तक चलेगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लिखा–''जय सियाराम। आज का दिन बहुत भावनाओं से भरा हुआ है। अभी श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारी मुझसे मेरे निवास स्थान पर मिलने आए थे। उन्होंने मुझे श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर अयोध्या आने के लिए निमंत्रित किया है। मैं खुद को बहुत धन्य महसूस कर रहा हूँ। ये मेरा सौभाग्य है कि अपने जीवन काल में, मैं इस ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बनूंगा।'' भारतीय सभ्यता का परमानंद लोक है–अयोध्या पुरी। भगवान राम अमृत–पुत्र हैं। ज्योति कलश छलकने में मर्यादा का चरित्र सूत्र है।

सप्तपुरियों में अग्रगण्य अयोध्या दुर्लभ इतिहास का अध्याय रच रही है। अयोध्या में जन्म लेने का सौभाग्य अनेक सात्विक अवसरों का साक्षी बना रहा है। सरस्वती के अनुष्ठान का कीर्तिमान राम मंदिर से जुड़ा है। राममंदिर विश्व का गौरव शिखर है। अयोध्या धाम जाने पर हर बार नया निर्माण मंत्रमुग्ध करता है। राम मंदिर भूमि पूजन के लिए आये यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के उद्‌बोधन के पहले आकाशवाणी लखनऊ के प्रातः आलोक कार्यक्रम में अयोध्या के राम पर मेरा सद्‌विचार प्रसारित किया गया।

श्री राम सृष्टि की सर्वोच्च सत्ता हैं। राम जन्म भूमि पर देश एवं संस्कृति के गौरव रूप में निर्मित हो रहे राम मंदिर में स्थापित होने वाले राम लला की पूजा–सेवा का दायित्व रामानंद सम्प्रदाय को सौंपा गया है। इस संप्रदाय का सूत्रपात पन्द्रहवी शताब्दी में महान संत एवं दार्शनिक स्वामी रामानन्दाचार्य ने किया था। यद्यपि प्रयाग में पैदा हुए रामानन्द की साधना काशी थी, किन्तु उन्होंने आराध्य के रूप में श्रीराम, माँ सीता और उनकी अयोध्या को शिरोधार्य किया। अयोध्या के दस हजार मंदिरों में अस्सी प्रतिशत मंदिर रामानन्द सम्प्रदाय के हैं। रामानंद को स्वयं श्री राम का पर्याय माना जाता है। यह तथ्य **''रामानंद स्वयं रामः प्रादुर्भूति महीतले''** में समाहित है।

इसमें रामानंद संप्रदाय के शीर्ष प्रतिनिधि माने जाने वाले तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास और मर्मज्ञ आचार्यो को सम्मिलित किया गया है। राम लला का विग्रह जिस योग में स्थापित किया जायेगा वह अद्‌भुत–अपूर्व है। राम जन्म जैसे योग में प्राण प्रतिष्ठा कूर्म द्वादशी को सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि योग में होगी।

आचार्यो के मार्गदर्शन में राम लला की पूजा

सेवा के विधि विधान को अंतिम रूप दिया जा रहा है। उपासना का यह विधिविधान पूरी शास्त्रीयता और प्रतिबद्धता के साथ फलीभूत करने के लिए आचार संहिता ग्रंथबद्ध की जा रही है। इसका संकलन अंतिम चरण में है। इसे अंतिम स्वरूप तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष स्वामी गोविन्द देव गिरि सहित ट्रस्ट के सदस्य स्वामी वासुदेवानंद, स्वामी विश्व प्रसन्न तीर्थ, स्वामी परमानन्द जैसे धर्माचार्य देंगे। श्री राम को देश के अनेकानेक संप्रदाय–उपसंप्रदाय शिरोधार्य करते हैं। किसी के लिए वह महापुरुष हैं किसी के लिए देवता, तो किसी के लिए भगवान विष्णु के आंशिक अथवा पूर्णावतार के रूप में ईश्वर हैं। रामानंद संप्रदाय की दृष्टि में श्रीराम परात्पर ब्रह्म और ईश्वर के भी रूप में स्वीकृत शिरोधार्य हैं।

रामकथा के अमर गायक और उनकी अमर कृति रामचरित मानस का उदाहरण अद्वितीय है। इसमें श्रीराम को ब्रह्मा, विष्णु और शिव से ऊपर बताया गया है। शिव पार्वती से राम के अवतार की कथा बताते हैं। हरि अनन्त हरिकथा अनन्ता की सार्वभौमिक जीवन्तता है। प्रभु राम विराट व्यक्तित्व में गहन दर्शन जीवन छिपाएं है। मनु शतरूपा की संस्कृति का दिव्य व्याख्यान अयोध्यापुरी कर रही है। सविता में यशस्वी ऋषि जन्मते हैं। देवत्व की सरस्वती तुलसी की कृति हैं। आज अयोध्या के लिए हर दिन आनन्द का उत्सव हैं। पुण्य बढ़ने पर दर्शन करने का सौभाग्य मिलता है। शब्द–चित्रों के माध्यम से आँखों देखा हाल सुनाने की परम्परा है। समय इतिहास बनाता है। दुर्लभ समय आने पर निश्छल वाणी अमृतपान कराती है। सरस्वती को जीवन देने वाले एक दिन वरद्–पुत्र बन जाते हैं। विद्या, धन, शक्ति और शांति की अधिष्ठात्री देवियाँ हैं। अयोध्या के मनु ने लिखा है–''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।'' मातृशक्ति वंदन इतिहास रचना है।

माता के ऋण की कृतज्ञता सत्कर्म का मूलमंत्र है। विश्व का दुर्लभ संयोग है कुलगीत रचनाकार की जननी का नाम स्थान नाम से सरस्वती ने जोड़ दिया। अयोध्या सत्य का सर्वोच्च शिखर है। संसार के सत्यवादियों में अग्रगण्य जीवन बचाता है। अयोध्या का इतिहास सबसे बड़ा है।

रामलला की प्रतिमा चिन्तय चैतन्य बनकर विराजमान होगी। प्रस्तर निर्मित प्रतिमा स्थापना में वैदिक विधि विधान से प्राण प्रतिष्ठित किया जायेगा। परात्पर ब्रह्म के साक्षात विग्रह के प्रति अर्चकों का आचार व्यवहार श्रेष्ठ होगा। वैदिक संस्कृति संस्कारों से पूर्ण अर्चक ब्रह्म मुहूर्त में प्रार्थना के माध्यम से रामलला को जगाएंगे। जगाने के बाद आचमन इत्यादि कराया जायेगा। राम लला के दिन का श्रीगणेश गोदान से होगा। इसके बाद मुख्य अर्चक राम लला से संवाद स्थापित करेंगे। जीवन के परम सत्य से संदर्भित प्रश्न अर्चक रामलला तक संप्रेषित करेंगे। अपने अंतःकरण में राम लाल के प्रसादस्वरूप परम नेहाभिव्यक्ति में उसकी निवृत्ति स्वीकार करेंगे। रामलला की गरिमा में स्नान कराएंगे। स्नान के बाद पूजन और पट खुलने पर रामलला लोगों को दर्शन दें, इससे पहले उनका विधि–विधान से श्रृंगार किया जायेगा।

रामलला के प्रति आदर अनुराग पट खुलने के साथ होने वाली श्रृंगार आरती से परिलक्षित होगा। कुछ देर बाद रामलला को बाल भोग प्रस्तुत किया जायेगा। मध्यान्ह रामलला के सम्मुख अर्पित होने वाले राजभोग से रामलला की चैतन्यता परिभाषित होगी। रामलला यही राजपुत्र की गरिमा के अनुरूप स्थापित होंगे और इसी गरिमा के अनुरूप मध्यान्ह राजभोग और राजभोग आरती के बाद उन्हें शयन कराया जाएगा। सांध्य बेला आरम्भ होते ही उत्थापन आरती से जगाया जायेगा।

जलपान के बाद रामलला को नित्य उद्यान का भ्रमण कराया जाएगा।

नित्य पूजा सेवा में रामलला के मनोरंजन और उनके सांस्कृतिक सरोकार का ध्यान रखा जाएगा। संगीता राधना की संजीवनी मंत्र मुग्ध करेगी। सायं मर्मज्ञ कलाकार प्रेम और भक्ति में पगे गीतों की प्रस्तुति से रामलला को रिझाएंगे। सन्ध्या आरती रामलला के दरबार में सांस्कृतिक सरोकारों के आदान प्रदान का शिखर स्थापित करेगी। सन्ध्या आरती के बाद स्वाद और पौष्टिकता से युक्त रात्रि भोज और शयन आरती से राम लला को तुष्ट और आनन्दित रखने का पूरा यत्न किया जायेगा।

सहज सरलता अंदर से आती है। भगवान की चमक का सौभाग्य शुभी आँखें पाती है। अलौकिक अनुभूति का अद्भुत दृश्य आदर्श अद्वितीय अभूत पूर्व उदाहरण अयोध्या का राममन्दिर बन रहा है। अतुलनीय मंदिर के गर्भगृह में परम मंगल मुहूर्त 22 जनवरी 2024 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भगवान रामलाल की प्राण प्रतिष्ठा अक्षत, हल्दी देशी घी से करके सनातन अमृत–पथ का कीर्तिमान रचेंगे। सर्वकालिक मंदिर में राम लला के दो विग्रह स्थापित किये जाएंगे। इनमें एक अचल विग्रह और एक चल विग्रह होगा। आसन से उठाकर स्नान कराने और उद्यान भ्रमण जैसी नित्य की उपासना में चल विग्रह का उपयोग किया जाएगा। चल विग्रह के रूप में रामलला का वही विग्रह स्थाई गर्भगृह में स्थापित हो जायेगा, जो वैकल्पिक गर्भगृह में स्थापित है। अचल विग्रह निर्माणाधीन तीन विग्रहों में से होगा। राम मंदिर के गर्भगृह से शिखर तक स्वर्ण आभा बिखेरगी, आराध्य की प्रतिमा का सूर्य की किरणों से अभिषेक वर्ष 2025 में सम्भव होगा। अलौकिक अनुभूति कराने के लिए सरयू की गोद में राम चलित मानस अनुभव केन्द्र द्वीप के रूप में राम वनगमन की अनुभूति करायेगा।

राम मन्दिर के भूतल में अठारह कपाट महाराष्ट्र के जंगलों की सागौन की लकड़ी से निर्मित हैं। इन्हें स्वर्ण मंडित करने के लिए विशेष धातु की प्लेट लगायी जा रही है। नृत्य मंडप का शिखर बनकर तैयार है। अयोध्या से रामेश्वरम् लगने वाले 290 राम स्तम्भों में से सर्वाधिक दस रामस्तम्भ अयोध्या में लगेंगे। प्रथम राम स्तम्भ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अयोध्याधाम के मणि पर्वत पर लगाकर श्रीगणेश करेंगे। राजस्थान के माउंट बाबू से निर्मित पहला रामस्तम्भ अयोध्या में है। वाल्मीकि रामायण के श्लोकों में हर स्थान की कथा स्तम्भों में रहेगी। राम लला को भेंट में मिले छोटे सोने–चांदी के आभूषणों की ईंटे बनेगी।

प्रभु राम की जन्मभूमि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही अयोध्यापुरी में साल भर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की परम्परा आरम्भ होगी। प्राण प्रतिष्ठा के समय देश के पाँच लाख से अधिक गाँवों के मंदिर अपनी परंपरा में दीपोत्सव का आनंद नहाएंगे। अद्भुत भव्य रामजन्म भूमि का सौन्दर्य दुनिया देखती रह जायेगी। नई अयोध्या विश्व की सबसे सुन्दरतम नगरी बनेगी। जिस जनकपुर ने अपनी जानकी को जन्म जन्मांतर के लिए राघव को सौंप दिया, जिस संस्कार से अयोध्या और जनकपुर अटूट बंधन में बंधे, जहाँ की जानकी ने जनकपुर की कुलदेवी को अयोध्या में स्थापित किया। वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, भारवि, तुलसी, मैथिलीशरण गुप्त अयोध्या की भूरि–भूरि प्रशंसा करके अघाये। यही जन्मे लोगों को अयोध्या ने विश्व विख्यात बनाया है।

इस नैसर्गिक दुर्लभ कीर्तिमान को प्रधानमंत्री ऐतिहासिक अवसर का स्वयं को साक्षी मान रहे हैं। इससे बड़ा दिव्य संयोग अयोध्या के लिए क्या होगा ऐसी अयोध्या का कोटि–कोटि प्रणाम।

संस्कृतं वदतु (संस्कृत बोलिये)

नमस्ते / नमस्कारः।	नमस्ते / नमस्कार।	Hello!
प्रणामः।	प्रणाम।	Good day!
धन्यवादः।	धन्यवाद।	Thank You!
स्वागतम्।	स्वागत।	Welcome
क्षम्यताम्।	क्षम कीजिए।	Exuse me/Pardon me.
चिन्ता मास्तु।	कोई बात नहीं / जाने दो।	Don't worry
कृपया।	कृपया।	Please
पुनः मिलामः।	फिर मिलेंगे।	See you Later
अस्तु।	ठीक है। जी हाँ। जी।	All right
श्रीमन् / मान्यवर।	श्रीमन् / मान्यवर।	Sir!
मान्ये।	श्रीमती जी।	Madam!
उत्तमम् / शोभनम्।	अच्छा।	Very good!
बहु उत्तमम्।	बहुत अच्छा।	Excellent!
भवतः नाम किम् ?	आपका नाम क्या हैं ? (पु0)	What is your name ? (for masculine)
भवत्याः नाम किम् ?	आपका नाम क्या हैं ? (स्त्री0)	What is your name ? (for female)
मम नाम '.....' ।	मेरा नाम '.....' ।	My name is .....
एषः मम मित्रं '.....' ।	यह मेरा मित्रं '.....' ।	This is my friend ..... (for mas.)
एषा मम सखी '.....' ।	यह मेरी सखी '.....' ।	This is my friend ..... (for fem.)
भवान् / भवती कस्यां कक्षायां पठति ?	तुम किस कक्षा में पढ़ते हो ?	Which class aer you studyingin
अहं पच्चम–कक्षायां पठामि।	मैं पांचवी कक्षा में पढ़ता हूँ।	I study in the 5th class
भवतः ग्रामः / भवान् कुत्रत्यः ?	आप कहाँ के रहने वाले हैं	Which city are you form ?
अहं भोयर ग्रामस्य निवासी अस्मि।	मैं भोयर ग्राम का निवासी हूँ।	I am resident of New York

कैसे करें सूर्य पूजा

तांबे के लोटे में पानी, लाल फूल,
लाल चंदन ओर तिल डालकर उगते हुए सूर्य को अर्ध्य दें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

मंत्र का जाप करें।

जरूतमंद को लाल वस्त्र, तिल, ताम्बे के बर्तन तथा गेहूँ का दान करें। सूर्य देवता को तिल और गुड़ से बनी मिठाईयों का भोग लगाएं। तिल और गुड़ से बनी मिठाईयाँ खुद खाएं और दूसरों को भी खिलाएं।

विद्या भारती लक्ष्य के अनुरूप कार्य पद्धति

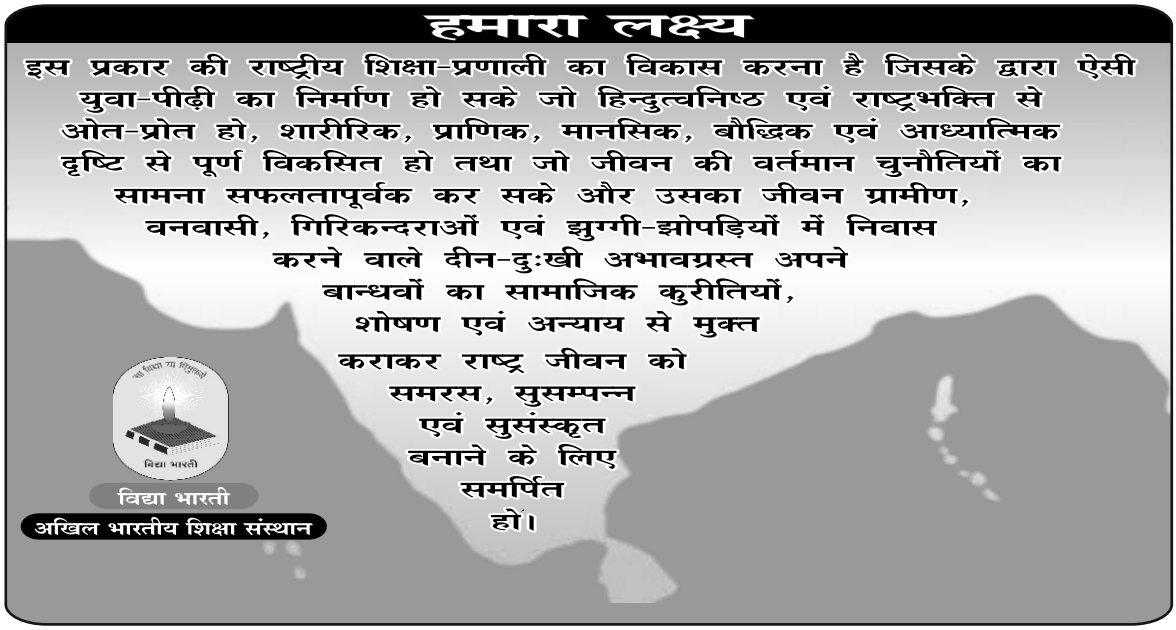

अंश 1 : राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली अर्थात् ?

➪ राष्ट्रीय, भारतीय तथा हिन्दू शिक्षा दर्शन पर्यायवाची।

➪ वैश्विकता के परिदृश्य में भी 'भारतीयता' का आग्रह क्यों ?

➪ क्योंकि, राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा। अतः वही जीवन दर्शन आवश्यक । प्रत्येक कार्य के लिए कुछ

निकर्ष (Output)

निकृष्टतम निकर्ष – मम सुख –मम हित।
इससे ऊपर का – मम जन सुख– मम हित।
श्रेष्ठ निकर्ष – बहुजन सुख –बहुजन हित
उच्चतम निकष – सर्वजन सुख –सर्वजन हित।

➪ यही भारतीय दर्शन, जीवन दृष्टि, धारणाक्षम वैश्विक प्रतिमान। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' तथा 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' में यही धारणा।

➪ प्रत्येक राष्ट्र की अपनी संस्कृति, अपना स्वभाव। हिन्दू जीवन दर्शन हमारा वैचारिक अधिष्ठान।

➪ अगली पीढ़ी में इसी भाव को पुष्ट करने के लिए शिक्षा।

➪ ज्ञान सार्वभौमिक किन्तु शिक्षा राष्ट्रीय।

➪ विकास का भारतीय प्रतिमान–व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमताओं–शरीर प्राण मन बुद्धि का आत्मा के प्रकाश में विकास।

➪ व्यक्ति अकेले नहीं जी सकता एकाकी न रमते। अतः व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण : व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्ठी गत विकास।

➪ शरीर सबल, प्राणशक्ति प्रबल, बुद्धि विवेकपूर्ण, मन शान्त, एकाग्र व अनासक्त, परन्तु इन सबका ' विनियोग कहाँ ?

➪ शिक्षा नीति, पाठ्यक्रम, कक्षा शिक्षण, शिक्षण विधि–सूत्र–युक्तियाँ–साधन सामग्री–सभी इसी प्रतिमान के अनुकूल हों तो राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली।

अंश 2 : हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हिन्दुत्वनिष्ठा अर्थात् ?

➪ हिन्दू जीवन पद्धति के प्रति आस्था तथा गौरव का भाव।

➪ हिन्दू धर्म, संस्कृति, सांस्कृतिक प्रतीकों, तीर्थों, श्रद्धा केन्द्रों, मानबिन्दुओं, मान्यताओं, परम्पराओं, संस्कारों तथा समस्त उपासना पद्धतियों के प्रति समादर भाव।

➪ ईश्वर की सत्ता तथा सर्वव्यापकता के प्रति विश्वास।

➪ कर्मफलवाद तथा कर्म अनुरूप पुनर्जन्म के विचार के कारण श्रेष्ठ कार्य करने की इच्छा।

➪ सम्पूर्ण सृष्टि में पंच महाभूतों–मनुष्यों–पशु–पक्षियों में, वृक्ष–वनस्पति में एक ही परमचैतन्य (ब्रह्म) की उपस्थिति की अनुभूति।

➪ यज्ञ–आरती, प्रार्थना–उपासना, धार्मिक–सांस्कृतिक व्रत–पर्व–त्यौहार आदि के प्रति श्रद्धा।

➪ आत्मा की अमरता की अवधारणा तथा जीवन के परम लक्ष्य – मोक्ष अर्थात् ईश्वर–प्राप्ति पर विश्वास । राष्ट्रभक्ति अर्थात् ?

➪ माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः–इस माता– पुत्र सम्बन्ध के भाव से मातृभूमि के प्रति प्रेम, अविचल श्रद्धा भक्ति व समर्पण का भाव।

➪ समान पूर्वज, समान संस्कृति, समान जीवन दर्शन और आध्यात्मिक परम्परा, समान सुख–दुःख की भावनाओं से युक्त समाज का घटक होने का गौरव।

➪ यह भूखण्ड मात्र नहीं, जाग्रत देवभूमि है, यह भाव।

➪ राष्ट्र की एकात्मता, अखण्डता और गौरव गरिमा को अक्षुण्ण रखने के लिए, उसकी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा और संवर्द्धन करने के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की तत्परता।

इस समाज का प्रत्येक व्यक्ति मेरा सहोदर है और उसकी सेवा–सहयोग करना मेरा कर्त्तव्य है, यह भाव।

कैसे करें यह भाव विकसित ?

➪ 'हिन्दुत्वनिष्ठा' तथा 'राष्ट्रभक्ति' के सही अर्थ का परिचय।

➪ अवतारी पुरुषों, सन्त–महात्माओं, ईश्वर भक्त तथा राष्ट्रभक्त महापुरुषों, राष्ट्र के लिए जीवन बलिदान करने वाले क्रान्तिकारियों, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने वाले जननायकों के जयन्ती–जन्मदिन मनाने के माध्यम से उनके कृतित्व का स्मरण कराना तथा उनके विशिष्ट गुणों को अपने जीवन में धारण करने की प्रेरणा जगाना।

➪ ध्रुव, प्रहलाद, वीर हकीकत आदि ईश्वर विश्वासी बालकों, तुलसीदास–सूरदास–रविदास –वाल्मीकि आदि भक्त–कवि, विवेकानन्द, दयानन्द–गुरु नानक देव–गुरुगोबिन्द सिंह कबीर आदि दिव्य विभूतियाँ, राणाप्रताप–शिवाजी, रानी लक्ष्मीबाई–दुर्गावती, चेन्नम्मा आदि शौर्यवान पूर्वजों, सुभाष–तिलक, परम पूज्य डाक्टर जी–श्रीगुरुजी आदि राष्ट्रनायकों आदि के चित्रों तथा जीवन प्रसंगों की जानकारी।

➪ वेद–उपनिषद– पुराण– रामायण– महाभारत – गुरुग्रंथ साहिब– सत्यार्थ प्रकाश– तिरुक्कुरल– जैनागम– बौद्ध त्रिपिटकों की जानकारी तथा उनके प्रेरणादायी प्रसंगों से जीवन निर्माण की दृष्टि।

➪ राष्ट्रीय एकात्मता के तत्व, चारों धाम, सप्तपुरियाँ, पवित्र नदियाँ, द्वादश ज्योतिर्लिंग, शक्तिपीठ, संस्कृत–संस्कृति, प्रतीक चिह्नों की विवेचना।

➪ परिवार, विद्यालय, बस्ती में मित्रों के साथ–साथ अपरिचितों–वृद्ध–निशक्त–विकलांग–कष्टपीड़ित जनों की सेवा– सहायता की प्रेरणा।

➪ अखण्ड–सांस्कृतिक भारत का भौगोलिक

परिचय, भारतमाता के चित्र का नमन–पुष्पार्चन, वन्देमातरम् गायन की ठीक स्थिति।

➪ ईश्वर भक्ति तथा राष्ट्रभक्ति सम्बन्धी श्लोक, सूक्तियाँ, चित्र आदि का भित्तिलेखन।

➪ देश दर्शन के कार्यक्रम में ऐतिहासिक गौरव तथा सांस्कृतिक एकात्मता के स्थानों का महत्त्व बताना।

➪ रंगमंचीय कार्यक्रमों में देशभक्ति के नाटक, गीत, समूहगान आदि।

➪ दैवीय आपदा–बाढ़, भूकम्प आदि से पीड़ित समाजबन्धुओं की सहायता के लिए तन–मन–धन से प्रत्यक्ष सहयोग।

अंश– 4 : जीवन की चुनौतियों का सामना

कौन सी चुनौतियाँ ?

सामाजिक रूढ़ियाँ व कुरीतियाँ–दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, अस्पृश्यता, पंथ–सम्प्रदाय–जाति –रंग–लिंग–भाषा–क्षेत्र–प्रान्त आदि के भेदभाव।

➪ भ्रष्टाचार, अनैतिकता, अनाचार अत्याचार–कदाचार

➪ पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, स्वार्थपूर्ण व आत्मकेन्द्रित उपभोक्तावाद। संवेदनशीलता और आत्मीयता का अभाव।

➪ दायित्व के प्रति उपेक्षा, सुविधाभोगी जीवन का आकर्षण, आपराधिक प्रवृत्ति, शोषण की प्रवृत्ति।

कैसे करें सामना : ऐसे भाव जगाकर ।

➪ आत्मविश्वास के भाव का जागरण चुनौतियों से कर्मशक्ति की परीक्षा। दुष्ट–अनाचारी–अत्याचारी सदैव रहे हैं परन्तु उनसे न डरना। साहस से दुष्कर्मों का विरोध करना।

➪ सच्चाई, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता, सदमार्ग, श्रमनिष्ठा और स्वावलम्बन दैवीय गुण हैं, इसका विश्वास जागरण ।

➪ सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले राष्ट्रनायक बने। आत्मीयतापूर्ण–संवेदनायुक्त जीवन मानव धर्म

➪ भगवान श्रीराम, श्रीऔष्ण आदि अवतारी पुरुषों, महापुरुषों, राष्ट्रनायकों–राणा प्रताप, शिवाजी के जीवन में आई चुनौतियों के प्रसंगों का वर्णन व चर्चा । साहस व धैर्य से मार्ग खोजा, यह बताना।

➪ आज जो सफल हैं खिलाड़ी फिल्म अभिनेता, राजनेता उनकी सफलता के पूर्व की संघर्ष गाथा बताना।

➪ किसी छोटे से भी अच्छे कार्य की सार्वजनिक प्रशंसा। खोया–पाया के माध्यम से ईमानदारी की प्रवृत्ति का जागरण।

➪ गणतंत्र दिवस पर पुरस्औत साहसी तथा समाज रक्षा के लिए प्राण जोखिम में डालने वाले बच्चों की चर्चा।

➪ शिक्षा प्राप्ति का उद्देश्य केवल नौकरी नहीं स्वावलम्बी जीवन का विकास, इस भाव का जागरण।

अंश 5 : ग्रामीण, वनवासी, गिरिकन्दराओं तथा झुग्गी–झोंपडियों में निवास करने वाले, दीन–दुःखी, अभावग्रस्त अपने बान्धवों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण व अन्याय से मुक्त कराना ।

क्या करें ?

➪ ग्रामीण, वनवासी–गिरिवासी, महानगरों की सेवा बस्तियों में रहने वाले, रोग– गरीबी–अशिक्षा के शिकार अपने ही समाज के अंगों के प्रति संवेदना सहानुभूति के भाव का जागरण ।

➪ उन्हें अपने साथ जोड़ने का प्रयास। यदि वे हम तक नहीं आ सकते तो संस्कार केन्द्रों–एकल विद्यालयों के माध्यम से उनके पास पहुँचना!

➪ उनमें स्वच्छता, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, स्वाभिमान और शिक्षा प्राप्ति के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना।

➪ समाजसेवियों, दानदाताओं, स्वयंसेवी सामाजिक संगठनों की सहायता से उन्हीं की शक्ति और बुद्धि के सामर्थ्य के विकास से उन्हें समाज की मुख्यधारा में जोड़ना ।

कैसे करें ?

➪ भैया–बहनों, आचार्यों, अभिभावकों, समिति सदस्यों को उन क्षेत्रों का प्रत्यक्ष दर्शन कराकर संवेदना जागरण करना।

➪ सेवा केन्द्र, संस्कार केन्द्र, एकल विद्यालय, स्व–सहायता समूह आदि की योजना करना ।

➪ उनकी जीवन परिस्थितियों, समस्याओं को निकट से समझने के लिए पूर्वछात्रों तथा बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों का एक–दो दिन उनके बीच निवास।

➪ युवाओं का संगठन, सामाजिकता का भाव, नागरिक अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति जागरुक करना।

➪ उनमें सुप्त हिन्दुत्व का जागरण और उनके रीति–रिवाजों, परम्पराओं, मान्यताओं के प्रति स्वाभिमान का जागरण करना ।

➪ नियमित अन्तराल पर उनके बीच जाना और समय–समय पर अपने विद्यालयीन सामाजिक तथा पारिवारिक कार्यक्रमों में उन्हें आमंत्रित करना।

➪ केवल कार्यक्रमों तक सीमित न रहकर उनके घर में जाकर और अपने घर में बुलाकर स्वागत–सत्कार के माध्यम से समरसता का भाव सतत एवं धैर्यपूर्वक प्रयासों से विकसित करना।

➪ सेवा बस्ती के प्रतिभाशाली बच्चों के शुल्क, गणवेश, पुस्तकों आदि की व्यवस्था क्षमतावान अभिभावकों–समिति सदस्यों के माध्यम से करना।

➪ पर्वो तथा महापुरुषों की जयन्ती, वार्षिकोत्सव आदि पर समाज के विभिन्न वर्गों को आमंत्रण।

➪ अंश 3 शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से विकसित

विकास का आयाम

1. शारीरिक विकास

उद्देश्य व परिभाषा

➪ स्वस्थ अर्थात् 'स्व' में स्थित। शारीरिक क्षमताओं, जैसे–शक्ति, सामर्थ्य, लोच, सुडौलता, सुपुष्टता, नीरोगता तथा सहनशक्ति का विकास।

➪ सभी शारीरिक अवयवों व उनके द्वारा होने वाले क्रियाकलापों की व्यवस्थितता ।

प्राण शक्ति का विकास ।

➪ 72,000 नाड़ियों के रूप में शरीर की वायरिंग को कार्यशील रखना।

➪ भावना शक्ति धारणा शक्ति के माध्यम से क्रियाशक्ति का जागरण।

➪ व्यक्तित्व के सन्तुलन तथा मूल प्रवृत्तियों का नियमन – परिमार्जन।

2. प्राणिक विकास

➪ मन की शक्ति का सन्तुलित विकास ।

➪ ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों का समुचित उपयोग।

➪ मन को शांत तथा एकाग्र बनाकर 'सीखने' की क्रिया को गतिशील करना।

3. मानसिक विकासआयु अनुरूप बुद्धिलब्धि (फ) का विकास 'जो मन में आए वह करना' के स्थान पर मन में आने वाली बात का विवेकपूर्ण विचार करने का स्वभाव।

अवलोकन, समीक्षा, संश्लेषण–

3. मानसिक विकास

माध्यम/कार्यक्रम

➪ भोजन में सात्विकता, पौष्टिकता, सुरुचिपूर्णता, समय पालन आदि।

➪ व्यक्तिगत तथा स्थानगत स्वच्छता–दाँत, नाखून, त्वचा तथा कमरा–वेश–बिस्तर, अध्ययनस्थल की स्वच्छता।

4. बौद्धिक विकास

5. आध्यात्मिक विकास विश्लेषण–तुलना–तर्क

➪ आदि की क्षमता तथा विवेकशक्ति का विकास।

➪ अर्जित ज्ञान की व्यावहारिक धरातल पर अभिव्यक्ति।

➪ प्रत्युत्पन्नमति (Presence of mind) व तर्क

क्षमता का विकास। परमात्म तत्त्व से परिचय।

➪ सभी में परम चैतन्य तत्त्व की उपस्थिति की प्रतीति।

➪ कथा–कहानी, प्रश्नमंच, अभिनय आदि।

➪ वर्णानुसार मातृभाषा, संस्कृत तथा अंग्रेजी के शब्दों (निश्चित संख्या में) को सीमित समय में बोलने का अभ्यास।

➪ नदियों, पर्वतों, महासागरों, महाद्वीपों, वैज्ञानिकों, क्रान्तिकारियों आदि के नाम की क्रमबद्ध सूची बोलने के खेल।

➪ समस्यामूलक प्रश्न देकर उत्तर की खोज। परिवार, बस्ती, ग्राम, नगर की समस्याओं की खोज।

➪ गणित के सूत्रों तथा विज्ञान के सिद्धान्तों की विवेचना तथा रचना प्रक्रिया।

➪ कार्य–कारण सम्बन्ध (Cause–effect relationship) खोजी स्वभाव (Probing & proving) तथा अभिव्यक्ति क्षमता (expression capacity) के विकास के प्रयोग।

➪ वन्दना सभा में आध्यात्मिक वातावरण। 'मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ' का भाव जागरण।

➪ सन्त–महात्माओं के प्रवचन, जीवन–प्रसंग।

➪ पशु प्रवृत्ति से दैवत्व की ओर प्रगति।

➪ धार्मिक श्रद्धा केन्द्रों के दर्शन।

➪ व्रत–पर्व–त्यौहारों के महत्त्व की जानकारी।

➪ नैतिकता, सौन्दर्य बोध, राष्ट्र

➪ भक्ति, सहयोगी भाव तथा जीवन गीता–रामायण–पुराण कथाओं के प्रेरक अंशों का स्वाध्याय, चर्चा मूल्यों का विकास।

➪ गौ–गंगा–गीता–तुलसी–यज्ञ–प्रार्थना–उपासना।

➪ श्रम के प्रति निष्ठा।

➪ पर्यावरण संरक्षण का दायित्व बोध।

➪ महापुरुषों की जयन्ती।

➪ समाज के पिछड़े बन्धुओं के प्रति संवेदनशीलता के भाव के जागरण हेतु कार्यक्रम।

राजू की समझदारी

जतनपुर में लोग बीमार हो रहे थे। डॉक्टर ने बीमारी का कारण मक्खी को बताया। जतनपुर के पास एक कूड़ेदान है। उस पर ढ़ेर सारी मक्खियाँ रहती हैं। वे उड़कर सभी घरों में जाती हैं, वहां रखा खाना गंदा कर देती हैं। उस खाने को खाकर लोग बीमार हो रहे थे। राजू दूसरी क्लास में पढ़ता है। उसकी मैडम ने मक्खियों के कारण फैलने वाले बीमारी को बताया। राजू ने मक्खियों को भगाने की ठान ली। घर आकर मां को मक्खियों के बारे में बताया। वे हमारे खाने को गंदा कर देती हैं। घर में आकर गंदगी फैलाती हैं। इसे घर के बाहर भगाना चाहिए। राजू बाजार से एक फिनाइल लेकर आया। उसके पानी से घर में साफ सफाई हुई। रसोई घर में खाना को ढकवा दिया। जिसके कारण मक्खियों को खाना नहीं मिल पाया। दो दिन में मक्खियाँ घर से बाहर भाग गयीं। फिर घर के अंदर कभी नहीं आयीं।

शिक्षा : स्वयं की सतर्कता से बड़ी–बड़ी बीमारियों से बचा जा सकता है।

संघ में महिलाओं की स्थिति

दूसरी बात है कि सम्पूर्ण हिन्दू समाज को संगठित करते समय महिलाओं का क्या? यह प्रश्न डॉ. हेडगेवार से एक महिला ने 1931 में पूछा। आप बात कर रहे हो हिन्दू समाज के संगठन की, लेकिन 50 प्रतिशत महिलाओं को तो वैसे ही छोड़ दिया आपने। तब डॉ. हेडगेवार ने उनको कहा कि आपकी बात बिल्कुल ठीक है, परंतु आज वातावरण ऐसा नहीं है कि पुरुष जाकर महिलाओं में काम करें। इससे कई प्रकार की गलतफहमियों को मौका मिलता है। कोई महिला अगर काम करने को जाती है तो हम उसकी पूरी मदद करेंगे। तब उस महिला ने इसी प्रकार चलने वाला एक 'राष्ट्र सेविका समिति' नाम का संगठन चलाया। आज वह भी भारतव्यापी संगठन बन गया है। संघ के संस्कारों की कार्यपद्धति पुरुषों के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में, महिलाओं के लिए राष्ट्र सेविका समिति में ये दोनों समानांतर चलेंगे। एक–दूसरे के कार्यक्षेत्र में काम नहीं करेंगे एक–दूसरे की हमेशा मदद करके चलेंगे। ये उस समय तय हुआ। अगर इसको बदलना है तो दोनों तरफ लगना चाहिए कि इसको बदलना है तब वह होगा, नहीं तो नहीं होगा, ऐसे ही चलेगा। परंतु संघ के स्वयंसेवक जो अन्य काम करते हैं. सेवा कार्य करते हैं। 1 लाख 70 हजार से ऊपर छोटे–बड़े सेवा प्रकल्प चलते हैं। यह 5 साल के पहले का आँकड़ा है। 5 साल के बाद की गिनती अभी हो रही है। इस साल वह आँकड़ा आ जाएगा। उसमें तो महिला. पुरुष सभी काम करते हैं। संघ कोई संन्यासियों का संगठन नहीं है। अधिकांश स्वयंसेवक गृहस्थ कार्यकर्ता हैं। घरों में आना–जाना रहता है। हमारी माताएँ, बहनें अपनी–अपनी जगह से भी बहुत मदद सीधे संघ के कार्य को करती हैं। इतने सारे विविध कार्य चलते हैं, उसमें महिलाएँ आई हैं और आगे भी आएंगी।

ये संघ की कार्यपद्धति है और संघ सम्पूर्ण समाज को संगठित करना चाहता है इसमें संघ को पराया कोई नहीं। जो आज हमारा विरोध करते हैं वे भी हमारे हैं। यह हमारा पक्का है। उनके विरोध से हमारी क्षति न हो इतनी चिंता हम जरूर करेंगे। लेकिन हम लोग तो सर्वलोकयुक्त भारत वाले लोग हैं, मुक्त वाले नहीं हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नाते सबको जोड़ने का हमारा प्रयास है और सबको बुलाने का भी हमारा प्रयास रहता है। आखिर किसी को विरोध भी करना है तो वस्तुस्थिति के आधार पर हो। बस इतनी बात है। लेकिन मुख्य जो बात आती है कि ये हिन्दू के लिए ही क्यों? कल उसकी चर्चा करेंगे और उसके बाद भावी भारत के बारे में संघ की दृष्टि क्या है? इस विषय पर मैं आऊँगा । बहुत–बहुत धन्यवाद ।

मकर संक्रांति पर बिन्दु

- **मकर संक्रांति हिन्दुओं का पवित्र तथा मोक्ष प्रदान करने वाला त्यौहार है।**
- **यह त्यौहार प्रत्येक वर्ष 14 या 15 जनवरी को मनाया जाता है।**
- **हिन्दू पंचांग में मकर संक्रान्ति पौष मास में पड़ता है।**
- **मकर संक्रान्ति का त्यौहार भारत के साथ–साथ पड़ोसी देश नेपाल में भी मनाया जाता है।**

हँसते-हँसते जीना

1 जीतो – भईया, आज समोसे अच्छे नहीं बने हैं, कल वाले अच्छे थे।

समोसे वाला – क्या बात कर रही हैं बहन जी, यह कल वाले ही तो हैं।

1 बच्चा – गुड नाइट मम्मी ।

मम्मी – गुड नाइट बेटा ।

बच्चा – गुड नाइट डैडी

डैडी – गुड नाइट बेटा ।

बच्चा – (परेशान होकर) अरे, गुड नाइट कहाँ है, पूछ रहा हूँ! मच्छर काट रहे हैं।

एक आदमी खड़े–खड़े चाबी से अपना कान खुजला रहा था। दूसरा व्यक्ति उसे गौर से देखते हुए बोला– भाई साहब, आप स्टार्ट नहीं हो रहे, तो धक्का लगाऊँ।

आजकल डिटर्जेंट के विज्ञापन में बच्चे कपड़े गन्दे कर घर आ जाते हैं। बचपन में हम ऐसे आ जाया करते थे, तो कपड़े बाद में धुलते थे, पहले हम धुले जाते थे।

राष्ट्रीय पक्षी मोर

हमारा राष्ट्रीय पक्षी है मोर,
देखकर सब इसको हो जाते विभोर।
ताली बजाकर वो मचाते शोर, देखो
कितना सुन्दर है ये मोर!
कितनी सुन्दर इसकी काया, पंखों से
फैलाता है माया।
नीलकमल सा रंग है इसका,
मधुर–मधुर सा कण्ठ है जिसका।
मेघ करें बारिश घनघोर,
नाच दिखाये ये चहुँ ओर।
दिल चुराये है मोर,
बन जाये चितचोर।

गीत

बहुत पुरानी बात है कि एक जंगल में आग लग गयी। जंगल के सारे पशु-पक्षी भाग गये, लेकिन वह तोता उसी पेड़ पर बैठा रह गया। कुछ देर बाद भगवान मनुष्य का रूप धारण करके आये और तोते से कहने लगे–

आग लगी इस वृक्ष में, पक्षी गये सब भाग,
तोता तुम क्यों जल रहे, तुम क्यों नहीं उड़
जात उस मनुष्य की बात सुनकर तोता बोला– फल खाये इस वृक्ष के, गन्दे कीन्हे पात।
यही हमारा धर्म है, हम जलें इसी के साथ।।

यह सुनकर मानवरूप में भगवान् बहुत प्रसन्न हुए। भगवान को तोते पर दया आ गयी, उन्होंने जंगल को पुनः हरा भरा कर दिया।

बालकोना

(बुद्धि परीक्षण)

सही उत्तर पर सही का (✓) निशान लगाइए-

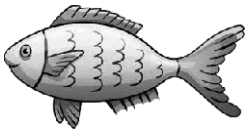

प्र.– सबसे बुद्धिमान मछली कौन सी होती है ?

उ.– (टेनफिस, डालफिन, फैसोवरी)।

प्र.– विश्व का कौन सा ऐसा पक्षी है, जो बाघ की तरह बोलता है ?

उ.– (बाघ, चिम्पाश्री, विर्टन पक्षी)।

प्र.– सबसे जहरीली मछली कौन सी होती है ?

उ.– (स्टेनफिश, डालफिन, मछली)।

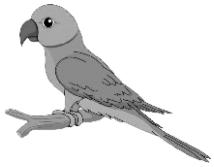

प्र. वह कौन सा जीव है, जो आँखें बन्द करके भी देखता है ?

उ.– (स्कंक, तोता, बुलबुल)।

प्र.– वह कौन सा जीव है, जो महीनों तक बिना कुछ खाये–पिये रह सकता है ?

उ.– (ध्रुवीय पेंग्विन, स्टेफिश, डारफिन)।

प्र. कौन सा जीव पानी नहीं पीता ?

उ.– (अमेरिका का कंगारू रेट, पपीहा, गौरेया)।

प्र. सबसे खतरनाक पक्षी कौन सा है ?

उ. (बाज, कौआ, कैसोबरी बर्ड)।

प्र.– किस चिड़िया की आवाज सबसे मधुर होती है?

उ.– (कोयल, बुलबुल, मोर)

प्र. एक मच्छर के मुँह में कितने दाँत होते हैं ?

उ.– (32, 36, 22, 42)

प्र.– मकड़ी बिना कुछ खाये–पिये कितने वर्ष जीवित रह सकती है।

उ.– (29, 20, 10, 40)

प्र.– वह कौन सा पक्षी है, जो घोसला नहीं बनाता है?

उ.– (कौआ, चिड़िया, कोयल)

प्र.– एक मगरमच्छ के मुँह में कितने दाँत होते हैं ?

उ.– (64, 32, 82)

प्र. – कौन सी मछली कीड़ों के ऊपर थूकती है?

उ. (निर्जन, आर्कर, फिश)

प्र. सबसे तेज रफ्तार वाला जीव कौन सा है ?

उ.– (वाज, कबूतर, हाथी)।

प्र. – सबसे बुद्धिमान जानवर कौन माना जाता है ?

उ.– (घोड़ा, चिम्पाजी (बंदर))

उत्तर की जाँच : डालफिन, विर्टम पक्षी, स्टेन फिश, स्कंक, ध्रुवीय पेग्विन, कंगारूरेड कैशोवरी वर्ड, बुल–बुल, 22 होते है, 10 वर्ष, कोयल, 82 दाँत, आर्कर फिश, बाज, चिम्पाजी

गतिविधियाँ

गोरखपुर में प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान व शिशु शिक्षा समिति गोरक्षप्रान्त के निर्देशानुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षको को प्रशिक्षित करने व शिक्षकों में ज्ञानात्मक, सृजनात्मक, कौशलात्मक, भावनात्मक विकास करने के उद्देश्य से सरस्वती शिशु मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सुभाषचन्द्र बोस नगर, सूर्यकुण्ड, गोरखपुर में संकुल स्तरीय आचार्य विकास वर्ग का आयोजन किया गया। जिसके उद्घाटन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि शिशु शिक्षा समिति गोरक्ष प्रान्त के प्रदेश निरीक्षक मा० राम सिंह जी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप विद्या भारती से सम्बद्ध विद्यालयों में आचार्यों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से इस आचार्य विकास वर्ग का आयोजन किया गया है। विद्या भारती के आचार्यो को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 व विद्या भारती के लक्ष्य के अनुरूप अपने आप को अध्यापन कार्य के लिए तैयार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश के स्वतंत्रता के बाद देश ने सभी क्षेत्रों में पर्याप्त प्रगति किया है लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में जो परिवर्तन होना चाहिए था राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जिसके माध्यम से हम विद्या भारती द्वारा निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति करने में सफल होंगे। आचार्य विकास वर्ग के द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता शिशु शिक्षा समिति गोरक्ष प्रान्त के मंत्री मा० राम नाथ गुप्त ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप कक्षाकक्ष की शिक्षण प्रक्रिया कैसे करें विषय पर, तृतीय सत्र में सरस्वती बालिका विद्यालय सूर्यकुण्ड की आचार्या श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव ने भारत की समृद्ध ज्ञान परम्परा, चतुर्थ सत्र में प्रधानाचार्य श्री राज बिहारी विश्वकर्मा शिक्षा का भारतीय प्रतिमान, पंचम सत्र में विद्या भारती के क्षेत्रीय प्रशिक्षण प्रमुख मा0 दिनेश सिंह ने 21वीं सदी का शिक्षक कैसा होना चाहिए विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। वर्ग के षष्ठ सत्र में विषयशः प्रस्तोता के रूप में क्रमशः विज्ञान–डॉ0 राजेश कुमार श्रीवास्तव, शारीरिक शिक्षा–श्री राकेश कुमार अग्रहरी, हिन्दी–श्री व्यास कुमार श्रीवास्तव, अंग्रेजी–श्री प्रदीप कुमार मिश्र, शिशु वाटिका–श्रीमती मीरा जी द्वारा आचार्य एवं आचार्या बहनों को प्रशिक्षित किया गया।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के उपाचार्य डॉ० आमोद कुमार राय ने कहा कि आचार्य विकास वर्ग आचार्यो को 21वीं सदी की शिक्षा जगत की चुनौतियों का सामना करने व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षण कार्य करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रशिक्षण के दौरान आचार्य के अध्यापन दक्षता में उत्तरोत्तर सुधार होता है जिससे वह बेहतर शिक्षक बनने में सफल होता है।

गुरू नानक जयंती

रामानुज दयाल अग्रवाल सरस्वती शिशु मन्दिर रामपुर बाग, बरेली में दिनांक 25 दिसम्बर 2023 दिन शनिवार को वन्दना सत्र में सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु व संस्थापक परम संत गुरू नानक जी का जन्म दिन विद्यालय में बड़े हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। विद्यालय के माननीय प्रधानाचार्य श्रीमान राजेश कुमार त्रिपाठी जी व कार्यक्रम के संयोजक श्री योगेश कश्यप जी व कु. मृदुला मिश्रा

जी शिशु भारती के प्रधाधिकारी भैया/बहिनों सभी ने मिलकर परम सन्त गुरू नानक जी के चित्र पर पुष्पार्चन करने के उपरान्त गुरु नानक जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन से सम्बन्धित शिक्षा प्रद अनेको घटनाएं सुनाकर भैया/गहिनों का ज्ञानवर्धन किया।

सुश्री निमिषा सोनी बनी एक दिन की थानेदार

दिनांक 21–12–2023 को सुश्री निमिषा सोनी को थाना मैगलगंज का एक दिन का थाना प्रभारी मनोनीत किया गया। मनोनीत थाना प्रभारी द्वारा एक दिन के थानेदार के रूप में सर्वप्रथम 10.00 बजे थाने पर आगमन किया गया जिनका स्वागत प्रभारी निरीक्षक श्री विवेक कुमार उपाध्याय द्वारा बुके देकर किया गया। मनोनीत थाना प्रभारी द्वारा कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात थाने पर तैनात स्टाफ से परिचय व उनके कार्यों के सम्बन्ध मे जानकारी ली गयी।

तत्पश्चात थाने का भ्रमण कर हवालात, कार्यालय, महिला हेल्प डेस्क का निरीक्षण भी किया गया इस दौरान थाने पर आये हुए शिकायतकर्ताओ की शिकायत सुनकर समुचित निस्तारण हेतु निर्देश दिये गये। सुश्री निमिषा सोनी द्वारा प्रेषवार्ता भी आहुत की गयी जिसमें पत्रकार बंधुओं द्वारा पूछे गये प्रश्नो का समुचित समाधान किया गया।

इसके अतिरिक्त सुश्री निमिषा सोनी द्वारा कस्बा मैगलगंज चौराहे पर चेकिंग करके लोगो को यातायात सम्बन्धी नियमों की जानकारी दी गयी तथा एक मोटरसाईकिल नम्बर अस्पष्ट होने के कारण चालान किया गया। नो–एंट्री मे प्रवेश करने वाले ट्रक के विरुद्ध भी चालान की कार्यवाही की गयी। पैदल गश्त के दौरान बैंक चेकिंग, वाहन चेकिंग भी की गयी। इस दौरान व्यापारी बन्धुओं से अतिक्रमण को नियंत्रित रखने एवं आपरेशन दृष्टि के तहत सीसीटीवी कैमरा लगवाने हेतु व्यापारियो से अनुरोध किया गया। गश्त के दौरान स्कूल से वापस लौट रही छात्राओं से उनकी कुशलता पूछी गयी।

जनसुनवाई के दौरान आये आगन्तुक श्री मुख्तयार सिंह जिनके पुत्र का पासपोर्ट बनना था उनके आवेदन पर शीघ्र पुलिस रिपोर्ट प्रेषित करने हेतु आगन्तुक को आश्वस्त किया गया।

उल्लेखनीय है कि सुश्री निमिषा गुप्ता एक मेधावी छात्रा है तथा वर्ष 2022 2023 में यूपी बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा की मैंगलगज क्षेत्र मे टापर रही हैं। एक दिन के थानेदार के रूप में तैनाती के दौरान उनके विद्यालय श्रीपाल सिंह सरस्वती विद्यामंदिर इण्टर कालेज मैगलगंज व उनके पिता श्री रमेश कुमार सोनी सहित पूरे मैगलगंज क्षेत्र के लिए गौरव व सम्मान का पल रहा।

ज्वाला देवी गंगापुरी में जगदीश चन्द्र बसु जयंती एवं बाल मेला कार्यक्रम का भव्य आयोजन

जगदीश चन्द्र बसु जयंती एवं बाल मेला कार्यक्रम का भव्य आयोजन प्रयागराजः ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज गंगापुरी रसूलाबाद में आज दिनांक 30 नवंबर 2023 को हुआ। बाल मेले के उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. युगांतर पाण्डेय (बाल रोग विशेषज्ञ किलकारी हॉस्पिटल तेलियरगंज प्रयागराज), विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्रीमती विनीता सिंह (उपसचिव उ.प्र. लोक सेवा आयोग प्रयागराज), कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में उपस्थित डॉ. शुभम सिंह (जिला प्रभारी पतंजलि योग समिति प्रयागराज) एवं विद्यालय प्रबंध समिति के प्रबंधक डॉ. आनंद श्रीवास्तव व प्रधानाचार्य श्रीमान युगल किशोर मिश्र जी ने माँ सरस्वती व जगदीश चंद्र बसु के चित्र पर दीप

जलाकर व पुष्पार्चन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अतिथि परिचय व सम्मान विद्यालय के प्रधानाचार्य युगल किशोर मिश्र द्वारा कराया गया। कार्यक्रम की प्रस्ताविकी कार्यक्रम संयोजक संदीप कुमार मिश्र द्वारा रखी गई।

मुख्य अतिथि ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालय समाज में संस्कार युक्त वातावरण के साथ–साथ भैया–बहनों के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर प्रयासरत हैं जिसके कारण आज संपूर्ण समाज उम्मीद करता है कि हमारे बालक का संस्कार अच्छा हो ताकि वह समाज निर्माण में अपना अभूतपूर्व योगदान दे सके। कार्यक्रम के अध्यक्ष महोदय ने बाल मेले को कौशल विकास का हिस्सा बताते हुये कहा कि बच्चा खेल–खेल में समाज के विभिन्न पहलुओं से परिचित हो जाता है।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य युगल किशोर मिश्र जी ने देश की युवा पीढ़ी को देश का भविष्य बताते हुये कहा कि भारत की युवा प्रतिभा का पूरा विश्व लोहा मान रहा है और आज का बालक अत्यन्त प्रतिभाशाली है।

इस अवसर पर विद्यालय के भैया/बहनों ने मेले की अदभुत तैयारी के साथ तरह–तरह के भारतीय परम्परागत स्वादिष्ट व्यंजन तथा मनोरंजन के लिए अनेक तरह के खेल और तर्कशक्ति विकास के लिए अन्य प्रकार के खेलों के स्टालों को लगाकर अभिभावकों और भैया/बहिनों का मनोरंजन किया। इस अवसर पर भारी संख्या में भैया/बहन अपने अभिभावकों के साथ मेले का आनन्द लेते दिखे।

विद्यालय के प्रबंधक डॉ. आनन्द श्रीवास्तव जी ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कार्यक्रम की सफलता का श्रेय प्रधानाचार्य,आचार्य/आचार्या व भैया/बहनों को दिया।

क्षेत्रीय पूर्णकालिक कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग

विद्या भारती प०उ०प्र० क्षेत्र के पूर्व क्षेत्र संघचालक स्वर्गीय श्री (डा०) जगमोहन गर्ग की कर्मस्थली, जन शिक्षा समिति प०उ०प्र० ग्रामभारती, पिलखुवा जिला–हापुड़ के कार्यालय पर क्षेत्र के सभी पूर्णकालिकों का एक अभ्यास वर्ग 22 से 25 नवम्बर 2023 तक सम्पन्न हुआ। इस पूर्णकालिक अभ्यास वर्ग में क्षेत्रीय संगठन मंत्री मान्यवर डोमेश्वर जी साहू, प्रान्त संगठन मंत्री मान्यवर भुवनचन्द जी एवं मान्यवर हरीशंकर जी, तीनों प्रदेशों के प्रदेश निरीक्षक/सह प्रदेश निरीक्षक, सम्भाग निरीक्षक, जिला निरीक्षक, जिला समन्वयक, सेवा विभाग आदि से सम्बन्धित अपेक्षित 52 पूर्णकालिकों में से 49 पूर्णकालिक उपस्थित रहे। केन्द्रीय अधिकारी के नाते विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री अवनीश जी भटनागर, अखिल भारतीय मंत्री डा0 किशनवीर सिंह शाक्य, अखिल भारतीय सहमंत्री रोहित वासवानी जी, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संयोजक विपिन राठी जी, क्षेत्रीय प्रशिक्षण सहसंयोजक राजीव गुप्ता जी, प्रान्तीय प्रशिक्षण संयोजक मनोज कुमार जी मिश्रा एवं प्रान्त प्रमुख क्रियाशोध डा० होशियार सिंह भाटी रहे। इन सभी अधिकारियों ने वर्ग के 14 सत्रों को गम्भीरतापूर्वक निम्न विषयों पर वार्ता की –

- ☆ पूर्णकालिकों की सकंल्पना।
- ☆ NEP के सन्दर्भ में पंचपदीय आधारित पाठ्योजना।
- ☆ विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता।
- ☆ विद्यालय केन्द्रित नवाचार एवं पर्णकालिकों से अपेक्षाएँ।
- ☆ NCF - FS, SE का क्रियान्वयन।
- ☆ NCF - FS, SE का क्रियान्वयन (चर्चा)।
- ☆ 21वीं सदी के आचार्यों से अपक्षाएँ (चर्चात्मक)।

- ☆ परिषदों की आवश्यकता, महत्व, रचना तथा संयोजक की भूमिका।
- ☆ आयाम एवं गतिविधियों के माध्यम से समाज जागरण।
- ☆ क्रियाशोध क्या और कैसे ?
- ☆ पूर्णकालिकों का स्वविकास एवं कायर्कर्त्ताओं के विकास में उनकी भूमिका।
- ☆ वैचारिक विमर्श।
- ☆ Class Room transaction of NEP.
- ☆ वित्त प्रबन्धन।

जन शिक्षा समिति पवउ०प्र० के मंत्री श्री विपिन कुमार जी गोयल ने कार्यालय के बन्धुओं के साथ सम्पूर्ण व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित किया। वर्ग में पर्यावरण को ध्यान में रखकर तथा स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग कर सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

गुरू नानक जयंती मनाई गयी

सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामबाग में आज सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी की जयंती मनाई गई।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री राजन श्रीवास्तव ने कहा कि गुरु नानक जी का जन्म रावी नदी के किनारे स्थित तलवण्डी नामक गाँव में कार्तिकी पूर्णिमा को एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। तलवण्डी पाकिस्तान में पंजाब प्रान्त का एक नगर है। इनके पिता का नाम मेहता कालूचन्द खत्री ब्राह्मण तथा माता का नाम तृप्ता देवी था। तलवण्डी का नाम आगे चलकर नानक के नाम पर ननकाना पड़ गया। इनकी बहन का नाम नानकी था। बालक नानक में बचपन से ही प्रखर बुद्धि के लक्षण दिखाई देने लगे थे। लड़कपन ही से ये सांसारिक विषयों से उदासीन रहा करते थे। पढ़ने–लिखने में इनका मन नहीं लगा। 7–8 साल की उम्र में स्कूल छूट गया क्योंकि भगवत्प्राप्ति के सम्बन्ध में इनके प्रश्नों के आगे अध्यापक ने हार मान ली तथा वे इन्हें ससम्मान घर छोड़ने आ गए। तत्पश्चात् सारा समय वे आध्यात्मिक चिन्तन और सत्संग में व्यतीत करने लगे।

उन्होंने आगे बताया कि इनका विवाह बालपन मे सोलह वर्ष की आयु में गुरदासपुर जिले के अन्तर्गत लाखौकी नामक स्थान के रहनेवाले मूला की कन्या सुलक्खनी से हुआ था। 32 वर्ष की अवस्था में इनके प्रथम पुत्र श्रीचन्द का जन्म हुआ। चार वर्ष पश्चात् दूसरे पुत्र लखमीदास का जन्म हुआ। दोनों लड़कों के जन्म के उपरान्त 1507 में नानक अपने परिवार का भार अपने श्वसुर पर छोड़कर मरदानाए लहनाए बाला और रामदास इन चार साथियों को लेकर तीर्थयात्रा के लिये निकल पड़े। उन पुत्रों में से श्रीचन्द आगे चलकर उदासी सम्प्रदाय के प्रवर्तक हुए।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य समेत समस्त आचार्य बन्धुओ एवं भैयाओ की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव सम्पन्न

विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा "अखिल भारतीय संस्कृति महोत्सव" का आयोजन 8,9,10 दिसम्बर 2023 को श्रीजी बाबा सरस्वती विद्या मंदिर मथुरा में किया गया। इस समारोह में विद्याभारती पूर्वी उ0प्र0 के 32 भैया बहिनों ने सहभाग किया। संरक्षक के रूप में 5 आचार्य 3 आचार्या बहिनें उपस्थित थीं। क्षेत्र संयोजक और सहसंयोजक राजकुमार सिंह तथा जियालाल जी भी रहे। विद्याभारती पूर्वी उ०प्र० को "ओवर आल चैम्पियनशिप में दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। परिणाम इस प्रकार रहा–

कथा–कथन–

शिशुवर्ग–अंकुशा दूबे सरस्वती बालिका

विद्या मंदिर सूर्यकुण्ड गोरखपुर–प्रथम

बालवर्ग– आराध्या मिश्रा सरस्वती विद्या मंदिर विवेकानन्दनगर सुल्तानपुर–प्रथम

प्रश्नमंच–

शिशुवर्ग–प्रांजल शुक्ला, आर्या मिश्रा, अंश श्रीवास्तव सरस्वती शिशु मंदिर विवेकानन्दनगर सुल्तानपुर–द्वितीय

बालवर्ग–हिमांशु पटेल, प्रियांश शुक्ल, आयुष ओझा सरस्वती विद्या मंदिर रामबाग बस्ती–तृतीय

तरूण वर्ग–खुशी, सौम्या शुक्ला, अनुष्का शुक्ला सरस्वती विद्या मंदिर सगरा सुन्दरपुर प्रतापगढ़–द्वितीय

उक्त चारों परिणामों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये क्षेत्रीय संगठनमंत्री श्रीमान् हेमचन्द्र जी ने भैया/बहिनों एवं सम्बंधित विद्यालय परिवार को बधाई देते हुये भविष्य में सफलता प्राप्त कर यशस्वी होने की शुभकामना की है।

श्री सत्यशांति जन सेवा संस्थान, झांसी के सौजन्य से वितरण की गई सिलाई मशीन

आज दिनांक 08.12.2023 को सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, बाहर दतिया गेट झांसी में सिलाई मशीन वितरण का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री राजदेव सिंह (क्षेत्रीय प्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, झांसी), विशिष्ट अतिथि श्री सौरभ मुखर्जी (मुख्य प्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया) एवं श्रीमती दीप्ति मुखर्जी (मुख्य प्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ बैंक आफ इंडिया) रहे। अध्यक्षता माताजी श्रीमती शांति शर्मा जी की रही।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालय में आर्थिक रूप से कमजोर बहनों को स्वावलंबन बनाने हेतु सिलाई मशीन वितरण करना था। इस संदर्भ में जो बहनें सिलाई करके अपना धनोपार्जन करती हैं उनकी आवश्यकता को देखते हुए श्री सत्यशांति जन सेवा संस्थान झांसी द्वारा 4 सिलाई मशीन सप्रेम भेंट की गई। जिन बहनों ने सिलाई मशीन प्राप्त की उन्होंने सभी के समक्ष संकल्प लिया कि वह भविष्य में अपनी जैसी 10–10 बहनों को निःशुल्क सिलाई सिखाएंगी जिससे वह भी भविष्य में आत्मनिर्भर बन सकें। कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों का विद्यालय की प्रधानाचार्या सुश्री कल्पना सिंह जी ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विद्यालय की समस्त आचार्या बहनें, आचार्य बंधु एवं छात्रा बहनें आदि उपस्थित रहे।

हस्तशिल्प कला-विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन

रुपईडीहा, बहराइच (अमर भारती)। सरस्वती विद्या मंदिर रुपईडीहा बहराइच में स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भर भारत के परिप्रेक्ष्य में बाल मेला, हस्तशिल्प कला/विज्ञान प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्रीमती आभा गोयल जी पूर्व प्रांत संयोजिका दुर्गावाहिनी, विशिष्ट अतिथि ब्लॉक प्रमुख जय प्रकाश सिंह जी, मुख्य वक्ता विभाग बौद्धिक प्रमुख श्री अशोक जी, खंड प्रचारक सर्वेश जी जिला मंत्री विनोद पाठक जी रहे। बाल मेले में भैय्या/बहनों द्वार आकर्षक प्रदर्श किया गया। जिसमें भव्य श्री राममंदिर, बायोगैस संयंत्र ,सोलर सिटी, वाटर डैम, फ्लावर गार्डन, जे सी बी, ए टी एम व विभि वैज्ञानिक प्रयोग, आयुर्वेद औषधि केंद्र, पॉप कॉर्न, भेलपुरी, कॉफी, अनेक खाद्य पदार्थों के स्टॉल लगाए गए। आगंतुकों ने बच्चों के सफ आयोजन की भूरि–भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर विद्यालय प्राचा श्री अनुज सिंह जी समिति के अध्यक्ष श्री दिनेश अग्रवाल जी, उपाध्य श्री सुभाष चंद्र जैन जी, प्रबंधक डॉ उमाशंकर वैश्य जी (अध्यक्ष न पंचायत रुपईडीहा), सह प्रबंधक अंकुर अग्रवाल जी, सम्मानित अभिभावक बंधु उपस्थित रहें।

'विविध किया-कलाप करते हुए'

अभ्यास वर्ग में हमारे अतियिगण

रूप सज्जा प्रतियोगिता में श्री राम रूप में भैया-बहिन

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026
प्रेषण डाकघर–रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि– 5,6,7,8

हमारे विविध कार्यक्रम

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स–22, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ– 226020, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।

प्रकाशन तिथि : 01.01.2024